ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

छमाही हिंदी गृह पत्रिका

ऑयल किरण

অইল কিৰণ OIL KIRAN | 2016 | वर्ष 13 अंक 20 |

अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति की लेखनी से

आप को याद ही होगा शुरू-शुरू में जब कम्प्यूटर भारत में आया था तो लोगों को यह लगता था कि कम्प्यूटर पर सिर्फ अंग्रेजी में ही काम हो सकता है, पर भारत सरकार के राजभाषा विभाग और उसके सहयोगी संगठनों ने लोगों के इस भ्रम को तोड़ा और आज हम कम्प्यूटर पर सिर्फ हिन्दी में ही नहीं वरन भारत की क्षेत्रीय भाषाओं में भी कम करने में पूर्ण सक्षम हैं। आज हमारे कम्प्यूटरों में हिन्दी के साथ-साथ लगभग सभी भारतीय भाषाओं के लिए यूनिकोड आधारित एवं समर्थित कार्यक्रम स्वतः ही उपलब्ध हैं। आज अगर आप के पास इच्छा है तो बाजार में उपलब्ध सभी डिजिटल उपकरणों पर आप आराम से अपनी भाषा में काम कर सकते हैं। डिजिटल माध्यमों में हम अपनी भारतीय भाषाओं में अपना काम कर सकें इसके लिए भारत सरकार ने अनेक कार्यक्रमों की शुरुआत की है।

डिजिटल कार्यक्रम की शुरूआत का मूल उद्देश्य ही यही था कि - हमारा प्रबंधन पारदर्शी हो सके एवं सभी सूचनायें आसानी से सर्व सुलभ हो। हमारी कंपनी भारत सरकार के दिशा निर्देशों के अनुपालन के साथ ही उपरोक्त दोनों मूल उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रयासरत है। राजभाषा विभाग को प्रेषित की जानेवाली ऑनलाइन रिपोर्टों, पत्राचार के अलावा भी हमने अपने कार्यालयों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं उसके कार्यान्वयन हेतु अनेक नई डिजिटल पहलों की शुरुआत भी की हैं, और ये सभी पहलें आप को ऑयल इंडिया के वेबसाइट पर आराम से दिख जाएगी।

कुछ नया सोचने, उसे क्रियान्वित करने के लिए हमें अपनी भाषा चाहिए ही और उसे जन-जन तक तत्काल पहुंचाने के लिए हमें आज के डिजिटल उपकरणों की सहायता भी चाहिए और इस दिशा में हमने सही राय चुनी है, फलस्वरुप हमें हमारी इच्छित मंजिल भी जरूर मिलेगी।

प्राणजित डेका

(प्राणजित डेका)
महाप्रबंधक (जन कार्य) एवं
अध्यक्ष, रा. भा. का. स.

सम्पादकीय

भाषा और भावों की अभिव्यक्ति का इतिहास लगभग उतना ही पुराना है जितना कि मानव का इतिहास। भाषा के ही माध्यम से हम अपने भावों को बेहतर ढंग से अभिव्यक्त कर सकते हैं। हम अपने परिश्रम, प्रयास से विश्व की अनेक भाषायें सीख सकते हैं और उन सभी में अपने आप को अभिव्यक्त कर सकते हैं परंतु जितने बेहतर ढंग से हम अपने आप को अपनी मातृभाषा में अभिव्यक्त कर सकते हैं, उतने बेहतर ढंग से अन्य किसी भाषा में नहीं कर सकते हैं। मातृभाषा में व्यक्त हमारे विचार हमारे भावों, संवेदनाओं की सीधी या प्रथम अभिव्यक्ति है तो वहीं दूसरी भाषा में व्यक्त विचार अपने आप ही द्वितीयक हो जाते हैं। क्योंकि हम चाहे जितनी भी भाषाएं सीख लें परंतु हमारे अंदर पनपने वाले विचार, भाव, संवेदनायें सदैव हमारी मातृभाषा में ही उत्पन्न होते हैं। इसी संबंध में एक बहुत ही प्रचलित कहानी है कि – बहुत साल पहले किसी राज्य में एक पंडित जी ने अनेक भाषाएं सीख ली और अपने भाषा ज्ञान का दंभ भरने लगे। उन्होंने राज्य भर में यह प्रचारित करवा दिया कि मैं इतनी भाषाएं जानता हूं और उन पर मेरा इतना अधिकार है कि कोई यह नहीं बता सकता कि मेरी मातृभाषा क्या है ? इस पर राज्य के लोगों की अनेकों प्रतिक्रया हुई एक व्यक्ति ने कहा कि वह पंडित जी की मातृभाषा का पता लगा कर ही रहेगा। और एक दिन पंडित जी बहुत ही गहरी नींद में सो रहे थे तो उसने उनके ऊपर गरम पानी की पूरी बाल्टी डाल दी। पंडित जी अचानक से उठ कर लगे गाली देने। तब उस व्यक्ति ने कहा कि पंडित जी आप जिस भाषा में मुझे अभी गाली दे रहे हैं न, वही आपकी मातृभाषा है।

मातृभाषा किसी मानव के लिए, उसकी अभिव्यक्ति का प्रथम साधन है जिसमें सर्वप्रथम वह अपने संपूर्ण भावों को व्यक्त करता है, अपने प्रेम को व्यक्त करता है, अपने दुःख को व्यक्त करता है, अपनी सभी संवेदनाओं को व्यक्त करता है। फिर धीरे-धीरे वही मनुष्य बड़ा होता है और फिर किसी अनजान भाषा में अपने आप को आधा अधूरा व्यक्त करके खुद ही गौरवान्वित होने लगता है।

(डॉ. शैलेश त्रिपाठी)
सहायक हिन्दी अधिकारी

इस अंक में

मानवता की परिभाषा	1
राष्ट्रभाषा हिंदी	2
समाज और हमारा योगदान/ शुभ दीपावली	3
बढ़ती आबादी देश की बरबादी/ जिंदगी	4
हमारी हिंदी का वैश्विक उत्सव	5
ब्रह्मपुत्र की चिट्ठी	6
पछतायेगा कौन ?/ कमाल है ना !	7
अपहरण/ रिश्ते	8
सनम/ आज की दुनिया	9
हर पिता को समर्पित.....	10
सर्प/ छुरी	11
राजभाषा हिन्दी सहायिका : सहज डिजिटल	12
देश-भक्ति की पॉलिश	14
डॉ. शैलेश त्रिपाठी की कुछ कविताएं	16
सूर्यकांत त्रिपाठी निराला : अनूठे सरस्वती पुत्र	17
बेटियाँ	18
हिंदी के लेखक की रेटिंग	19
भाषाओं से बनती बिगड़ती सियासत और सरहदें	20
शिक्षक का महत्त्व	21
पुस्तकों की तिलस्मी दुनिया का सच	22
अजनबी	23
ऑयल इंडिया लिमिटेड, पाइपलाइन मुख्यालय.....	24
ऑयल पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी.....	25
ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान परियोजना.....	26
बेटी क्या संतान नहीं !!/ देशप्रेम और बलिदान	27
थक गया/ मौत/ मयूर विहार/ मैं क्यों गया वहां	28
लेखा-जोखा	29

सलाहकार
श्री प्राणजित डेका
महाप्रबंधक (जन कार्य)
श्री दिलीप कुमार दास
उप महाप्रबंधक (सी एस आर)

सम्पादक
डॉ. शैलेश त्रिपाठी
सहायक हिन्दी अधिकारी

सम्पादन-सहयोगी
श्री दीपक प्रसाद
श्री विजय कुमार गुप्ता

मुख्य पृष्ठ छायाचित्र

पत्रिका में प्रकाशित लेख/ रचनाओं आदि में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। 'ऑयल' राजभाषा अनुभाग तथा सम्पादक का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

निःशुल्क एवं आंतरिक वितरण हेतु प्रकाशित।

संपादकीय कार्यालय :
राजभाषा अनुभाग, जन कार्य विभाग
ऑयल इंडिया लिमिटेड
डाकघर : दुलियाजान 786 602, जिला : डिब्रुगढ़ (असम)
ई-मेल : hindi_section@oilindia.in

मुद्रक : दुलियाजान प्रिन्टिंग वर्क्स, दुलियाजान, दूरभाष : 0374-2800246

मानवता की परिभाषा

सिद्धांत यादव
कक्षा - XI
ऑयल इं. हा. से. स्कूल, दुलियाजान

बचपन से ही मेरे हृदय के निभृततम कोने में मानव के प्रति एक नफरत की चिनगारी जल रही है और आज वही शोला बनकर समस्त मानव समाज को ध्वस्त कर देना चाहती है। स्वयं मानव की संतान होते हुए भी मेरे मन में मनुष्यों के प्रति सहानुभूति नहीं है। होगी भी कैसे ? बचपन से ही इनकी उत्पीड़न का शिकार जो हुआ हूँ। वो दिन मैं आज भी नहीं भूल पाया जब ये लोग मेरा अपहरण कर मुझे मेरे माता-पिता से दूर ले आये। बचपन से ही न तो पिता का प्यार मिल सका और न ही माँ की ममता। मेरे ही जैसे अनेक मासूम इनकी वजह से ममता की छाया से वंचित रह गये। ये हमारी मातृभूमि से बहुत दूर ले आये और यहाँ कारखानें में काम पर लगा दिया। हमारा जीवन मात्र कारखाने में ही सिमट कर रह गया। खेलने कूदने की बात तो अलग है, अगर काम में जरा भी अपनी मनमानी करो तो उसका परिणाम सोचनीय होता है, ये होते कौन हैं। हमारे जीवन को ध्वस्त करनेवाले?

अचानक, बाहर एक दर्द भरी चीख सुनकर उस ध्यानमग्न बारह वर्षीय बालक 'मोहन' के रोंगटे खड़े हो गये। उसका नन्हा, मासुम हृदय भय से काँप उठा। उसे समझते देर न लगी कि किसी बच्चे ने काम में कुछ गलती की होगी और उसे गलती की सजा दी जा रही है। धीरे धीरे चीख रात के अंधेरे में गुम हो गयी और 'मोहन' का मन फिर प्रश्नों के सागर में गोते लेने लगा।

क्या सभी मनुष्य ऐसे ही होते हैं ? क्या विधाता की सुन्दरतम रचना मानव की यही असलीयत है ? क्या यही है मानवता की परिभाषा अपने फायदे के लिए एक नहीं बल्कि सैकड़ों बच्चों को उनके माता-पिता के रहते अनाथ बना देना, कंहाँ तक ठीक है ? भगवान ने सृष्टि की रचना की, उसे अत्यन्त रमणीय बनाया। काश, उसे पता होता कि उसकी सबसे सुन्दर रचना मानव ही उसकी सृष्टि का, जिसका आधार प्रेम है, अन्त करेगा।

नहीं, आज के बाद मैं उनके लिए काम नहीं करूँगा। मैं इन्हें समझाने की चेष्टा करूँगा कि अपने स्वार्थ के लिए दूसरों का जीवन नष्ट करना ठीक नहीं। पर क्या ये हृदयहीन मेरी बात समझ पायेंगे? मेरे समझाने पर क्या ये मासूमों की बलि देना बन्द कर देंगे ? इसी प्रकार स्वयं से बातें करते करते न जाने कब मोहन की आँख लग गयी।

प्रातः बादलों में छिपा, सूर्य धीरे धीरे बाहर आने लगा। उसकी लालिमा से आकाश लोहित हो उठा। वातावरण में नई उमंग पैदा हो गयी। फिर भी आकाश में जिस तरह रौनक थी, मोहन के चेहरे पर वह रौनक नहीं थी। ऐसा प्रतीत होता था मानो वह आज होनेवाली किसी अशुभ घटना का समाचार दे रहा हो।

सुबह दिवा के पास एक व्यक्ति आया। वह व्यक्ति अपने मालिक के खास आदमियों में से एक था। उसकी फटकार सुनते ही 'मोहन' उठ खड़ा हुआ।

व्यक्ति : अरे, तू अबतक सो रहा है। चल, मालिक ने तुझे इस वक्त याद किया है।

मोहन मन में नफरत की चिनगारी लिए हुए चुपचाप उस व्यक्ति के पीछे चल पड़ा। व्यक्ति उसे एक कोठे में ले गया। वहाँ उसका मालिक बैठा हुआ था। मोहन को देखकर मालिक बोला आज तुझे हमारी दूसरी कम्पनी में काम करने जाना है। तू अन्य बच्चों और (पास खड़े व्यक्ति की ओर इसारा करके) इसके साथ शाम को जहाज से दूसरे कारखाने पर चले जाना।

मोहन : आप मुझे मेरे माता-पिता से चुराकर लाये हैं। मुझे उनके पास भेज दीजिये, मैं यहाँ काम नहीं करूँगा।

मालिक : अरे आज तुझे क्या हुआ है? तू तो यहाँ पिछले पाँच सालों से काम कर रहा है।

मोहन : अपने स्वार्थ के लिए आप मासूमों से उनका बचपन छीनते हैं। यह ठीक नहीं। भगवान आपको कभी माफ नहीं करेगा।

मालिक : बकवास बन्द कर और मैं जो कहता हूँ वह चुपचाप करता चल इसी में तेरी भलाई है।

मोहन : मैं यहाँ काम नहीं करूंगा।

मालिक : आखिरी बार पूछता हूँ, करेगा या नहीं ?

मोहन : नहीं।

फिर उसका मालिक भी शांत हो गया और वहां का वातावरण भी। कुछ क्षण के बाद मालिक ने अपने बन्दूक की सारी गोलियां मोहन के अन्दर डाल दिया।

क्रांति की वह टिमटिमाती लौ सदा के लिये बुझ गयी ! एक बार फिर हिंसा की जीत हुई, अधर्म फिर जीत गया।

राष्ट्रभाषा हिंदी

नेहा कुमारी प्रसाद
कक्षा - XII (A)
ऑयल इं. हा. से. स्कूल, दुलियाजान

संसार में मानव ही सबसे अधिक सौभाग्यशाली है कि उसे अपनी बात कहने के लिए भाषा का वरदान मिला है। प्रत्येक मनुष्य अपने भावों की अभिव्यक्ति किसी-न-किसी भाषा के माध्यम से ही करता है। भाष के अभाव में न तो किसी सामाजिक परिवेश की कल्पना की जा सकती है और न ही सामाजिक व राष्ट्रीय प्रगति की कल्पना की जा सकती है। साहित्य, कला, विज्ञान और दर्शन सभी का आधार भाषा ही है। किसी भी देश के निवासियों में राष्ट्रीय एकता की भावना के विकास और पारंपरिक संपर्क के लिए एक ऐसी भी भाषा अवश्य होनी चाहिए जिसका व्यवहार राष्ट्रीय स्तर पर किया जा सके। किसी भी देश में सबसे अधिक बोली एवं समझी जाने वाली भाषा ही वहाँ की राष्ट्रभाषा होती है। प्रत्येक राष्ट्र का अपना स्वतंत्र अस्तित्व होता है, अतः राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाने के लिए एक ऐसी भाषा की आवश्यकता होती है जिसका प्रयोग सभी नागरिक कर सकें तथा राष्ट्र को सभी सरकारी कार्य उसी के माध्यम से किए जा सके। ऐसी व्यापक भाषा ही राष्ट्रभाषा कही जाती है। दूसरे शब्दों में राष्ट्रभाषा से तात्पर्य है - किसी राष्ट्र की जनता की भाषा। मनुष्य के मानसिक तथा बौद्धिक विकास के लिए भी राष्ट्रभाषा आवश्यक है। मनुष्य चाहे जितनी भी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त कर ले परंतु अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए उसे अपनी भाषा की शरण लेनी ही पड़ती है। इससे उसे मानसिक संतोष का अनुभव होता है। इसके साथ ही राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने के लिए भी राष्ट्रभाषा की आवश्यकता होती है। संविधान का निर्माण करते समय यह प्रश्न उठा था कि किस भाषा को राष्ट्रभाषा बनाया जाए। प्राचीनकाल में भारत की राष्ट्रभाषा संस्कृत थी। मुगलकाल में उर्दू थी। अंग्रेजों के शासनकाल में अंग्रेजी ही उनके राजकाज की भाषा थी। अंग्रेजी का प्रभाव इतना अधिक बढ़ा कि वह आज तक फल-फूल रही है भारतीय संविधान द्वारा हिंदी को राष्ट्रभाषा घोषित कर देने पर भी उसका समुचित उपयोग नहीं किया जा रहा है। यद्यपि हिंदी एवं अहिंदी भाषा के अनेक विद्वानों ने राष्ट्रभाषा के रुप में हिन्दी का समर्थन किया है फिर भी हिंदी को उसका गौरवपूर्ण स्थान नहीं मिल पाया है। राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में जो बाधाएँ हैं उन्हें दूर किया जाना चाहिए। देवनागरी लिपि पूर्णतः वैज्ञानिक लिपि है किंतु उसमें वर्णमाला, शिरोरेखा, मात्रा आदि के कारण लेखन में गति नहीं आ पाती। अहिंदी भाषियों को हिंदी व्याकरण के नियम कठिन लगते हैं। इनको भी सरल बनाया जाए जिससे वे भी हिंदी सीखने में रुचि ले सके।

समाज और हमारा योगदान

श्रीमती नंदा शर्मा
प्राथमिक शिक्षिका, केन्द्रीय विद्यालय
दुलियाजान

न्यूज चैनल खोलने पर या अखबार के पन्ने पलटने पर भी हम ऐसी खबरों को पाते हैं जो समाज कल्याण की ओर ध्यान खींचती है। साथ ही हम पढ़ते हैं या देखते हैं उन लोगों के बारे में जो समाज सेवा की ओर विशिष्ट योगदान देती हैं।

बहुत बार हम अपनी अति व्यस्त जीवन शैलियों के कारणवश सोचते हैं कि जीवन अपनी और परिवार की जरुरतों को पूरा करने में ही खतम हो जाएगा। समाज सेवा या पिछड़े वर्ग के लिए हमसे कोई मदद नहीं होगी। ऐसे किसी भी कार्यक्रम में सक्रिय हो पाना मुश्किल लगता है। अपने जीवन को महज स्वार्थों की पूर्ति का नाम कुछ लोग देने लगते हैं।

यहाँ एक बात मैं रखना चाहती हूँ कि हर इंसान की परिस्थिति दूसरे से अलग होती है। अतः किन्ही दो लोगों को एकदम से समान मान लेने वाली स्थितियाँ विरले ही मिलती हैं। हर व्यक्ति एक जिम्मेदार भारतीय नागरिक सदैव सामाजिक रहता है व समाज को आगे बढ़ाने के लिए काम भी कर सकता है।

हम सभी को आगे बढ़ने के लिए, समाज के उत्थान के लिए, उसमें उत्तरोत्तर सुधार लाने के लिए हर कोई अपना योगदान कभी भी किसी भी प्रकार दे सकता है। उम्र उसमें बाधक नहीं हो सकती। उम्र महज एक शारीरिक स्थिति है। उससे मन का उत्साह, विचारों की ताजगी प्रभावित नहीं होती।

जाहिर है किसी का भी सकारात्मक प्रयास व्यर्थ नहीं जाता. यह हो सकता है हमारा छोटा प्रयास लोगों का ध्यान नहीं खींच पाये पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराये बिना नहीं रहता है।

हम अक्सर अपने पारिवारिक दायित्वों में मशगूल रहते हैं। जब ये दायित्व कम होने लगते हैं, तब उम्र का तकाजा होने लगता है। मेरा यह कहना है कि उस समय भी हम किसी न किसी रूप में उन लोगों की सहायता कर सकते हैं, जिन्हें मदद चाहिए। हम खाली समय में कुछ पिछड़े बच्चों को पढ़ा सकते हैं, महिलाओं को स्वास्थ्य संबंधी जानकारी दे सकते हैं। वे अपने ही घरों में काम करने वालियों को कोई कौशल सिखा सकती हैं जैसे स्वेटर बनाना, मेहंदी लगाना इत्यादि।

हर आदमी छोटा, बड़ा, वृद्ध, युवा समाज का न सिर्फ हिस्सा है बल्कि उसमें क्रमशः सुधार का एक घटक भी बन सकता है। कहते हैं आकाश की कोई सीमा नहीं है उसी तरह कल्याणकारी कार्य की भी सीमा नहीं होती, हम सभी को इस तरह लीन होकर आत्मसंतुष्टि लेनी चाहिये छोटी-छोटी बूंदें सागर बनाने में जरूर मदद करेंगी।

शुभ दीपावली

सुश्री जुली बाल्मिकी
कक्षा - XII
ऑयल इं. हा. से. स्कूल, दुलियाजान

जगमग - जगमग दीप जलें
रोशन घर का हर कोना हो।
प्रकाश के जैसे उज्ज्वल तन हो
जन-जन स्वजन और निर्मल मन हो।
रोशनी आगाज जहां हो
तुम वहां हों हम वहां हो।
दूर - थमके अंधकार हो
मीठे सुर हो मीठी ताल हो
शुभकामनाएँ है यही हमारी
सतरंगी हर दीपावली हो।

बढ़ती आबादी देश की बरबादी

सुश्री जूली बाल्मिकी
कक्षा - XII
ऑयल इं. हा. से. स्कूल, दुलियाजान

आधुनिक भारत में जनसंख्या बड़ी तेजी से बढ़ रही है। देश के विभाजन के समय यहाँ लगभग 42 करोड़ आबादी थी, परंतु आज यह एक अरब से अधिक है। हर वर्ष यहाँ एक आस्ट्रेलिया जुड़ रहा है। भारत के मामले यह स्थिति अधिक भयावह है। यहाँ साधन सीमित है। बढ़ती जनसंख्या के कारण अनेक समस्याएं उत्पन्न हो रही है। इसके कारण देश में बेरोजगारी बढ़ती जा रही है। हर वर्ष लाखों पढ़े-लिखे लोग रोजगार की लाइन में बढ़ रहे हैं। खाद्य के मामले में उत्पादन बढ़ने के बावजूद भी देश का एक बड़ा हिस्सा भूखा सोता है। स्वास्थ्य सेवाएं बुरी तरह चरमरा गई है। यातायात के साधन में भी अनेक समस्याएं उत्पन्न हो रही है। कितनी ही ट्रेनें चलाई जाए या बसों की संख्या बढ़ाई जाए, हर जगह भीड़ ही भीड़ दिखाई देती है। बढ़ते जनसंख्या के परिणाम स्वरूप आवास की कमी हो गई है और लोगों ने फुटपाथों एवं खाली जगह पर कब्जे कर लिए हैं। आने वाले समय में यह स्थिति और विगड़ेगी जनसंख्या बढ़ने से देश में अपराध भी बढ़ रहे हैं। क्योंकि जीवन निर्वाह में सफल न होने पर युवा अपराधियों के हाथों का खिलौना बन रहे हैं। देश के विकास के लिए कितने ही दावे किए जाए, सच्चाई तो यह है कि आम आदमी का जीवन स्तर बेहद गिरा हुआ है। इसलिए आबादी को रोकने के लिए सामूहिक प्रयास किए जाने चाहिए। और सरकार को भी सख्त कानून बनाने होंगे तथा आम व्यक्ति को भी इस दिशा में स्वंय पहल करनी होगी। यदि जनसंख्या पर नियंत्रण नहीं किया गया तो हम कभी भी विकसित देशों की श्रेणी में नहीं खड़े हो पाएंगे।

जिंदगी

डॉ. मौसुमी बरकटकी

तेरे आइने में मेरा अक्स नहीं दिखता कभी
ऐ जिंदगी, तिलिस्मों से भरा है आंचल तेरा
आगोश में तेरे कभी सुकुन कभी बेचैनी है,
देखता हूँ आइना तेरा, सारा जहाँ नजर आता है
बड़ी कोशिश की मेरे हमसफर, समझने की तुझे
एक उम्र कम पड़ गई,
मांग रहा कुछ और मोहलत।

हमारी हिंदी का वैश्विक उत्सव

राकेश पांडेय

'हिंदी पर अटलजी ने यह लिखा - बनने चली विश्व भाषा जो, अपने घर में दासी, सिंहासन पर अंग्रेजी है, लखकर दुनिया हांसी, लखकर दुनिया हांसी, हिंदी दां बनते चपरासी, अफसर सारे अंग्रेजी मय, अवधी या मद्रासी, कह कैदी कविराय, विश्व की चिंता छोड़ो, पहले घर में, अंग्रेजी के गढ़ को तोड़ो।'

10 वें विश्व हिंदी सम्मेलन की गूंज शुरू हो गई है। वर्ष 1983 में नई दिल्ली में आयोजित तीसरे विश्व हिंदी सम्मेलन के लगभग 32 वर्ष बाद विश्व हिंदी सम्मेलन इस बार भारत में 10 से 12 सितंबर को भोपाल में आयोजित हो रहा है। पहले दो सम्मेलन गैरसरकारी थे, तीसरा मानव संसाधन मंत्रालय के अंतर्गत हुआ, किंतु चौथे सम्मेलन से यह आयोजन विदेश मंत्रालय के अधीन हो गया और सभी प्रकार के निर्णय मंत्रालय स्तर पर होने लगे।

विश्व हिंदी सम्मेलनों की प्रासंगिकता सदा प्रश्नों के घेरे में रही है, इस बार भी अनेक शंकाएं हैं। इस सम्मेलन से क्या उद्देश्य पूर्ण हो रहा है ? इन सम्मेलनों में पारित संकल्पों के नतीजतन वर्धा में महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय स्थापित किया गया। मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना हो चुकी है। पूर्व के सम्मेलनों में पारित संकल्पों के अनुसार 10 जनवरी का दिन विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

प्रथम सम्मेलन में यह विचार किया गया कि विश्व में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए एक अलग संस्था होनी चाहिए। इसी उद्देश्य से विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना मारीशस में की गई है। आज हिंदी का प्रयोग विश्व के अनेक महाद्वीपों में किया जा रहा है। हिंदी पूरे विश्व में अपने अस्तित्व को आकार दे रही है। ऐसे में विश्व हिंदी सचिवालय महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकता है। इसी प्रकार महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा की पीठों की स्थापना पूरे भारत में हो, इसकी आवश्यकता है। इससे विश्व हिंदी सम्मेलन में लिए गए संकल्पों की सार्थकता बढ़ेगी।

भूमंडलीकरण के इस युग में हिंदी तेजी से विश्व भाषा बनती जा रही है, किंतु हिंदी के सामने कई व्यावहारिक संकट भी हैं, जिनमें सबसे बड़ा संकट विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में हिंदी के छात्रों में भारी कमी आना है। विदेश मंत्री सुषमा स्वराज इन संकटों को नकारती हैं। वह कहती हैं कि ऐसा नहीं कह सकते कि विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ने वाले छात्रों की संख्या में कमी आई है, बल्कि प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण में बड़े पैमाने पर वृद्धि हुई है। उनके अनुसार अंग्रेजी भाषी देशों के विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ने वाले विदेशी छात्रों की समस्याएं अन्य देशों जैसे फ्रांस, जर्मनी, हंगरी, रूस, जापान, कोरिया आदि के विश्वविद्यालयों में हिंदी के छात्रों की समस्याओं से अलग हैं।

जिन देशों में पहले से हिंदी शिक्षण नहीं हो रहा है, उनमें हिंदी शिक्षण की शुरूआत करने तथा हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार करने के लिए विदेश मंत्रालय एक नई नीति पर कार्य कर रहा है। इनमें मंत्रालय में हिंदी प्रचार-प्रसार तंत्र को संवर्द्धित करना और हिंदी शिक्षण पीठों की स्थापना करके हिंदी भाषा के प्रति रुचि जगाना है। केंद्रीय हिंदी संस्थान से जो विदेशी छात्र हिंदी सीखकर अपने-अपने देश वापस जाते हैं, उन देशों में हिंदी शिक्षण और प्रचार-प्रसार में उनकी मदद लेना जैसे विषय विचाराधीन हैं।

जब से प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन की शुरुआत हुई है, तभी से हिंदी को संयुक्त राष्ट्र में स्थापित किए जाने की बात की जाती रही है। लेकिन ये सपना अभी दूर ही दिखता है। वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र में जो छह आधिकारिक भाषाएं अंग्रेजी, रूसी, फ्रांसीसी, चीनी, स्पेनिश और अरबी हैं, इनमें से चार संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्यों की भाषाएं हैं और अन्य दो अनेक संबंधित देशों द्वारा बोली जाती हैं।

प्रशासनिक व वित्तीय निहितार्थ। प्रशासनिक प्रक्रिया के तहत संयुक्त राष्ट्र महासभा से एक संकल्प पारित करवाना होगा, जिसके लिए कुल सदस्यों के दो-तिहाई बहुमत की आवश्यकता होगी। पूर्व सरकार नें 2 अक्तूबर को विश्व अहिंसा दिवस और वर्तमान सरकार ने पिछले वर्ष 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रुप में पारित करवा लिया था। आशा है कि एक दिन हम सभी हिंदी प्रेमियों का सपना पूरा होगा। विश्व हिंदी सम्मेलन की शुरूआत भी राजनीतिक उथल-पुथल के समय आपातकाल से पहले हुई थी। इस सम्मेलन को उस समय सभी ने सहजता से स्वीकार नहीं किया था। प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन के आयोजन की पृष्ठभूमि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले लल्लन प्रसाद व्यास ने बताया था कि उन्होंने अटल बिहारी वाजपेयी को भी आमंत्रित किया था, वह उनसे मिलने भी गए, किंतु वाजपेयी आयोजन में भाग लेने नहीं आए और बाद में आपातकाल के समय हिंदी पर अटलजी ने यह लिखा – बनने चली विश्व भाषा जो, अपने घर में दासी, सिंहासन पर अंग्रेजी है, लखकर दुनिया हांसी, लखकर दुनिया हांसी, हिंदी दां बनते चपरासी, अफसर सारे अंग्रेजी मय, अवधी या मद्रासी, कह कैदी कविराय, विश्व की चिंता छोड़ो, पहले घर में, अंग्रेजी के गढ़ को तोड़ो।

साभार दैनिक पूर्वोदय

ब्रह्मपुत्र की चिट्ठी

सुश्री अंशु अग्रवाल
कक्षा - XII
ऑयल इं. हा. से. स्कूल, दुलियाजान

बहुत दिन हुए
कोई संवाद नहीं
हमारे तुम्हारे बीच
नहीं सुना कोई शब्द तुम्हारा
कोई सामाचार मिला नहीं
लगता है व्यस्त हो –
नहीं कहूंगी कि भूल गए हो
या, किसी के जाल में फंस गए हो।
मुझे पता है
भूलना तुम्हारी आदत नहीं
न ही तुम इतने कमजोर हो
कि फंस जाओ कहीं भी।
हां, यह जरूर लगता है
मूसलाधार बरसात की चपेट में तुम
खिसियाए उफन रहे हो ....
यह खीस तुम्हारी विवशता भी हो सकती है।
बहुत कुछ हुआ होगा
कुछ बह गए होंगे –
तुम्हारी पगलाई लहरों में
जिन्हें अपने नए-नए यौवन पर
नियंत्रण करना नहीं आया होगा।
कुछ हथियारों की कहानी भी
जरुर बह गई होगी
और, नंगी लाशों के रुदन ने
तुम्हें घेर लिया होगा
तुम जरुर विचलित हुए होगे,
रोए भी होगे जरुरत से ज्यादा छुप-छुप कर
क्योंकि
मर्द रोते नहीं –
सबके सामने –
ऐसा सुना जाता है।।

पछतायेगा कौन ?

के. के. अग्रवाल
उत्पादन तेल विभाग

मैं रूठा, तुम भी रूठ गए
फिर मनाएगा कौन ?
आज दरार है, कल खाई होगी
फिर भरेगा कौन ?
मैं चुप, तुम भी चुप
इस चुप्पी को फिर तोड़ेगा कौन ?
बात छोटी को लगा लोगे दिल से,
तो रिश्ता फिर निभाएगा कौन ?
दुखी मैं भी और तुम भी बिछड़कर,
सोचो हाथ फिर बढ़ाएगा कौन ?
न मैं राजी, न तुम राजी,
फिर माफ करने का बड़प्पन दिखाएगा कौन ?
डूब जाएगा यादों में दिल कभी,
तो फिर धैर्य बंधायेगा कौन ?
एक अहम् मेरे, एक तेरे भीतर भी,
इस अहम् को फिर हराएगा कौन ?
जिंदगी किसको मिली है सदा के लिए ?
फिर इन लम्हों में अकेला रह जाएगा कौन ?
मूंद ली दोनों में से गर किसी दिन एक ने आँखे...
तो कल इस बात पर फिर
पछतायेगा कौन ?

कमाल है ना !

के. के. अग्रवाल
उत्पादन तेल विभाग

आँखे तालाब नहीं,
फिर भी, भर आती है!
दुश्मनी बीज नहीं,
फिर भी, बोयी जाती है!
होठ कपड़ा नहीं,
फिर भी, सिल जाते है!
किस्मत सखी नहीं,
फिर भी, रुठ जाती है!
बुद्धि लोहा नहीं,
फिर भी, जंग लग जाती है!
आत्मसम्मान शरीर नहीं,
फिर भी, घायल हो जाता है!
और, इन्सान मौसम नहीं,
फिर भी, बदल जाता है!...

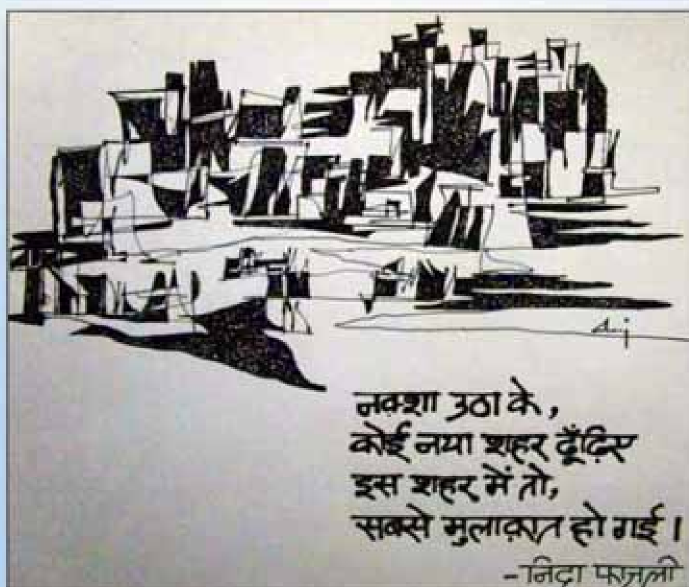

जोस्ना दास की कुछ कविताएं

जोस्ना दास
कोलकाता शाखा

(1)

अपहरण

अभी तो था, अभी कहीं खो गया,
इधर देखा, उधर देखा,
देखा ऊपर नीचे;
चारो दिशाओं में ढूढ़ लिया,
लेकिन नहीं पाया तुझे,
क्या ? तू कहीं चला गया या कोई तुझे ले लिया ?
या किसी ने तेरे साथ मजाक किया ?
पाँच मिनट में कैसे इधर उधर हो गया,
सोचती रहती हूँ मैं।
पुलिस को दिया खबर, ढेर दिए पैसा।
मिल जायेगा बोलते हैं, मत कर चिंता।
दूर दूर तक अंधरे में, तेरे मुँह से माँ की एक पुकार,
गूँज रही है मेरे कानों में,
आशा की एक झलक लेकर,
आज जिन्दा हूँ मैं।।

(2)

रिश्ते

कैसा है ये बंधन ? कैसा है ये रिश्ता ?
जो होते हुए भी नहीं है;
जो प्यार का बंधन भूल गया;
जहर का जलन में डुब गया।
जो रहकर भी नहीं रहा;
अपनों को पराया करके, पराये को अपना लिया।
जिसने अपने हाथों से ही अपना घर तोड़ दिया।
क्या बोलूंगी इस रिश्ते को ?
इस रिश्ते को क्या नाम दूँ ?
मेरे समझ में नहीं आया।
कैसे हैं ये लोग जो अपनों को छोड़ के,
परायों को अपना लेते हैं,
क्यों वह लोग कभी सोचते नहीं है-
जो अपनों को छोड़ के
पराये को अपना लिया
कभी उसके अपने भी उससे अलग हो जायेंगे।

(3)

सनम

आईए सनम, हमारा लीजिये सलाम,
तुम्हारी हँसी, तुम्हारी खुशी,
हमको देती है जान।
जब देखते हैं हम
तुम्हारा उदास चेहरा
लगता है जैसे हमारा
दिल कहीं खो गया
सारी दुनिया को प्यार करते हैं हम,
लेकिन तुम्हारे बिना यह सब है कम।
माँ, पापा, भाई, बहन सब तो होते हैं एक रिश्ते,
पर तुम हमारा, बन जाते हो एक अंग।
कभी बन जाते हो तुम हमारे आखों का आईना।
कभी बन जाते हो तुम हमारा परवाना।
अगर दूर रहते हो तुम,
पलपल रोते हैं हम।
दूर से सुनके तुम्हारी एक आवाज
भूल जाते हैं हम हमारे सारे गम।
शादी के दिन, तुम हमारे दिल में समाए जाते हो।
धीरे धीरे तुम हमारे अपने बन जाते हो।

(4)

आज की दुनिया

दुनिया एक खिलौना है, यहाँ आते जाते रहते हैं;
कोई आता है, कोई जाता है।
किसी का पता किसी को मालूम नहीं है।
यहाँ जीना भी तो जीना नहीं
मरना भी तो मरना नहीं;
पीना पड़ता है जहर।
आ थोडा झूम ले, ले ले थोड़ी सांस,
कल यहाँ मिलेगा या नहीं मुझे तो नहीं अहसास।
क्योंकि यहाँ आमने सामने को नहीं पहचानते,
भेद भाव दुनिया में खो जाते हैं।
जो सर उठा लेता, वह चरण नहीं देख पाता,
वह प्रेम को कहाँ समझेगा।
अरमानो के जंजीर तोड़ के, कैसे हम निकलेंगे?
सब रंगीले दुनिया के अंदर डूब गये है।
खुदा बचाये सबको ये जहरीली दुनिया से,
ये मेरी विनती खुदा के पास है।

हर पिता को समर्पित.....

रविकान्त मिश्रा
गोपनीय सचिव
कार्मिक विभाग, ऑयल, नोएडा

हर साल सर के बाल कम हो जाते हैं
बचे बालों में और भी चांदी पाते हैं
चेहरे पे झुर्रियों की तादाद बढ़ा जाते हैं
रीसेंट पासपोर्ट साइज फोटो में
कितना अलग नजर आते हैं
"अब कहाँ पहले जैसी बात" कहते जाते हैं
देखते ही देखते जवान पिताजी बूढ़े हो जाते हैं...

सुबह की सैर में चक्कर खा जाते हैं
सारे मौहल्ले को पता पर हमसे छुपाते हैं
दिन प्रतिदिन अपनी खुराक घटाते हैं
और तबियत ठीक होने की बात फोन पे बताते हैं
ढीली हो गयी पतलून को टाइट करवाते हैं
देखते ही देखते जवान पिताजी बूढ़े हो जाते हैं...

किसी के देहांत की खबर सुन घबराते हैं
और अपने परहेजों की संख्यां बढ़ाते हैं
हमारे मोटापे पे हिदायतों के ढेर लगाते हैं
तंदुरुस्ती हजार नियामत "हर दफे बताते हैं"
"रोज की वर्जिश" के फायदे गिनाते हैं
देखते ही देखते जवान पिताजी बूढ़े हो जाते हैं...

हर साल बड़े शौक से बैंक जाते हैं
अपने जिन्दा होने का सबूत दे कितना हर्षाते हैं
जरा सी बढ़ी पेंशन पर फूले नहीं समाते हैं
एक और नई (Fixed Deposit) करके आते हैं
खुद के लिए नहीं हमारे लिए ही बचाते हैं
देखते ही देखते जवान पिताजी बूढ़े हो जाते हैं...

चीजे रख के अब अक्सर भूल जाते हैं
उन्हें ढूँढने में सारा घर सर पे उठाते हैं
और मां को पहले की ही तरह हड़काते हैं
पर उससे अलग भी नहीं रह पाते हैं
एक ही किस्से को कितनी बार दोहराते हैं
देखते ही देखते जवान पिताजी बूढ़े हो जाते हैं...

चश्मे से भी अब ठीक से नहीं देख पाते हैं
ब्लड प्रेशर की दवा लेने में आनाकानी मचाते हैं
एलोपैथी के साइड इफेक्ट बताते हैं
योग और आयुर्वेद की ही रट लगाते हैं
अपने ऑपरेशन को और आगे टलवाते हैं
देखते ही देखते जवान पिताजी बूढ़े हो जाते हैं...

उड़द की दाल अब नहीं पचा पाते हैं
लौकी, तुरई और धुली मूंग ही अधिकतर खाते हैं
दांतों में अटके खाने को तिल्ली से खुजालाते हैं
पर डेंटिस्ट के पास कभी नहीं जाते हैं
काम चल तो रहा है की ही धुन लगाते हैं
देखते ही देखते जवान पिताजी बूढ़े हो जाते हैं...

हर त्यौहार पर हमारे आने की बाट जोहते जाते हैं
अपने पुराने घर को नई दुल्हन सा चमकाते हैं
हमारी पसंदीदा चीजों के ढेर लगाते हैं
हर छोटी-बड़ी फरमाईश पूरी करने के लिए
फौरन ही बाजार दौड़े चले जाते हैं
पोते-पोतियों से मिल कितने आंसू टपकाते हैं
देखते ही देखते जवान पिताजी बूढ़े हो जाते हैं...

(2)

रविकान्त मिश्रा
गोपनीय सचिव
कार्मिक विभाग, ऑयल, नोएडा

करें जब पाँव खुद नर्तन, समझ लेना की होली है...
हिलोरें खा रहा हो मन, समझ लेना की होली है...
इमारत इक पुरानी सी, रुके बरसों से पानी सी...
लगे बीवी वही नूतन, समझ लेना की होली है
तरसती जिसके हों दीदार तक को, आपकी आखें...
उसे छूने का आये क्षण, समझ लेना की होली है...
कभी खोलो हुलस कर आप, अपने घर का दरवाजा...
खड़े देहरी पे हों साजन, समझ लेना की होली है...
हमारी जिन्दगी है यूं तो, इक कांटों भरा जंगल...
अगर लगने लगे मधुवन, समझ लेना की होली है...
अगर महसूस हो तुमको, कभी जब सांस लेते हो...
हवाओं में घुला चन्दन, समझ लेना की होली है...
बुलायें पास जब तुमको, धुनें मेरी मुहब्बत की...
जब गाये ताल पे धड़कन, समझ लेना की होली है...
..... समझ लेना की होली है !! .....

सर्प

नारद प्रसाद उपाध्याय
भूतत्व एवं तैलाशय विभाग
ऑयल इंडिया लिमिटेड, दुलियाजान

सर्प
सर्प ही होता है।।
उसका वासस्थान
बन पर हो, या पेड़ पर
नदी पर हो, या नाला पर
खेत पर हो, या वाड़ी पर
गाँव पर हो, या घर पर
शहर पर हो, या खण्डहर पर
डंक मारना वह छोड़ता नहीं
वह - सभ्य बनता नहीं।।
उसे –
जितना भी दूध पिलाए
वह –
जितनी भी केचुली बदले
फिर भी वह –
विषाक्त दाँत से डंक मारता है
मृत्युलोक में पहुँचाता है
वह –
विषाक्त होता है।।
सर्प –
सर्प ही होता है।

छुरी

नारद प्रसाद उपाध्याय
भूतत्व एवं तैलाशय विभाग
ऑयल इंडिया लिमिटेड, दुलियाजान

जब पड़ती है छुरी, चोर - डकैतों के हाथ
लुटी जाती है, मनुष्य की जान-माल;
जब पड़ती है छुरी, सुरक्षाकर्मी के हाथ
सुरक्षा होती है मनुष्य की जान-माल।।

जब पड़ती है छुरी, उग्रवादी के हाथ
रक्त की धारा बहती है, धरती पर;
जब पड़ती है छुरी, चिकित्सक के हाथ
नव-जीवन मिलता है रोगी को।।

जब पड़ती है छुरी, कसाई के हाथ
हत्या होती है, निरीह प्राणी की;
जब पड़ती है छुरी, सुगृहिणि के हाथ
खाने को मिलते हैं व्यंजन अनेकों।।

राजभाषा हिन्दी सहायिका : सहज डिजिटल

केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिन्दी में काम करने की कठिनाई को सहज करने में सहज डिजिटल www.sahajdigital.com वेबसाइट केवल सहज ही नहीं बल्कि प्रयोग में सफल भी है। इसमें कार्यालय पद्धति के अनुरूप प्रपत्र यथा पत्र, कार्यालय आदेश, टिप्पणी आदि तैयार कर दिया गया है। प्रयोगकर्ता को केवल अपने कार्य अनुरूप कालम में भरना है, तदुपरान्त प्रिंट लेना है। वेबसाइट में दिये गए कुछ सूचनाओं की झलक यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

अपने कंप्यूटर पर हिंदी कैसे इंस्टाल करें, यह आप अपने आप कर सकते हैं

भारत सरकार का यूनिकोड टाइपिंग टूल

भारतीय भाषा डेटा सेंटर http://ildc.in/ पर यूनिकोड टाइपिंग टूल उपलब्ध है। इसके उपयोग से भारत की 22 भाषाओं में बहुत आसानी से अपनी चुनी हुई भाषा में कंप्यूटर पर टाइप कर सकते हैं। हिंदी में टाइप करने के लिए फोनेटिक की-बोर्ड के अलावा इनस्क्रिप्ट की-बोर्ड भी उपलब्ध है।

गूगल का गूगल इनपुट उपकरण

http://www.google.com/ inputtools/windows पर जाकर गूगल के input tool का इस्तेमाल करते हुए हिन्दी भाषा का ऑप्शन चुनिये और फाइल डाउनलोड करें और फिर इसे अपने कम्प्यूटर पर रन करके इन्स्टाल करें। बस इतने से ही आपके कम्प्यूटर पर हिंदी भाषा के प्रयोग की सुविधा उपलब्ध हो जाएगी।

माइक्रोसॉफ्ट का इंडिक लैंग्वेज इनपुट टूल

http://www.bhashaindia.com/ilit पर जाकर माइक्रोसॉफ्ट का indic language input tool (ILIT) का इस्तेमाल करते हुए हिन्दी भाषा का डेस्कटॉप ऑप्शन चुनिये और इसे अपने विंडोज संस्करण (version) के अनुसार अपने कम्प्यूटर

पर इन्स्टाल करें। बस इतने से ही आपके कम्प्युटर पर हिन्दी भाषा के प्रयोग की सुविधा उपलब्ध हो जाएगी। इस टूल से आप चाहें तो conventional key board (Remington) का इस्तेमाल कर सकते हैं या फिर Inscript की-बोर्ड का।

इससे आप विंडोज के सभी पैकेज (MS Word, Excel, Powerpoint, Access) इत्यादि पर हिन्दी का प्रयोग आसानी से कर सकेंगे। यह बहुत ही आसान टूल लगभग सभी इंटरनेट ब्रौजेर्स पर चलता है। यह सुविधा UNICODE compliant है, आप इंटरनेट पर राजभाषा का इस्तेमाल बेझिझक कर सकते हैं। सामान्यता आप द्वारा भेजे गए ई-मेल इत्यादि बहुत आराम से पाने वालों को मिलेंगे और पढ़े जा सकेंगे।

यदि आप को टाइपिंग नहीं आती तो फोनेटिक की-बोर्ड (Roman) प्रयोग कर सकते हैं। जैसा उच्चारण करतें हैं वैसा ही अँग्रेजी में लिखें हिन्दी अपने आप आ जाएगी। आप टास्क-बार पर दिये Language-Bar हिन्दी (H)/अँग्रेजी (EN) भाषा चुन सकते हैं। इसका toggle है Alt+Shift। इसमें और ज्यादा विस्तृत जानकारी के लिए राजभाषा विभाग की वेबसाइट http://rajbhasha.gov.in/pdf/ittools.pdf पर जा सकते हैं।

सहज डिजिटल वेबसाइट के माध्यम से दैनिक तैयार किए जाने वाले टिप्पणियाँ, कार्यालय आदेश आदि एवं पत्राचार हिन्दी या द्विभाषी बनाना आसान है। टिप्पण के लिए यहाँ पर आपको मिलेंगे नोटिंग फोरमैट के विकल्प। नया नोट, ऊपर से जारी नोट, फ्रंट पेज पर, बैक पेज पर में से अपना विकल्प चुन सकते हैं। पत्राचार के लिए आदेश, कार्यालय आदेश, कार्यालय ज्ञापन, पत्र, अधिशासी पत्र, ब्रीफ (पक्षसार), मीटिंग का कार्यवृत, मीटिंग की चर्चा का वृतांत, नोटिफिकेशन इत्यादि बना सकते हैं।

यह वेबसाइट भारत सरकार के पूर्व वरिष्ठ उप सचिव श्री राकेश कुमार शर्मा द्वारा संचालित है जो राजभाषा कार्यान्वयन को बेहतर समझते हैं। इन्होंने 'राजभाषा कार्यान्वयन में डिजिटल टूल्स का उपयोग' विषय पर भारत के कई केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिन्दी कार्यशाला कर चुके हैं, जो काफी सफल रहा, नतीजे उत्साहवर्धक रहे। कार्यशाला का मुख्य प्रयोजन व लक्ष्य प्रतिभागियों को कंप्यूटर पर व्यवहारिक प्रशिक्षण दे कर सक्षम करना है और उनमें यह एहसास जागृत करना है कि हिन्दी में कंप्यूटर पर काम करना केवल आसान ही नहीं; इससे उनके रोजमर्रा के काम का निष्पादन बहुत आसानी से संभव है। कोई कार्यालय इस तरह के कार्यशाला आयोजन के लिए rakesh@sahajdigital.com पर उनसे संपर्क कर सकते हैं।

अनुनाद ईपत्रिका से साभार

देश-भक्ति की पॉलिश

हरिशंकर परसाई

मेरा एक दोस्त विदेश में है। भारत-पाकिस्तान लड़ाई के दिनों में मुझे उसका एक पत्र मिला। लिखा था : पिछली रात मुझे सपने में भारत माता ने दर्शन दिए। मैंने कहा - 'माँ, तुम्हारी जय हो रही है। हमलावर को मारकर भगाया जा रहा है। तुम्हारे पैंतालीस करोड़ बेटे तुम्हारी विजय के लिए सर्वस्व बलिदान करने को तैयार हैं।' भारत माता ने कहा - 'तुम्हें अपने देश की सही जानकारी नहीं है।' मेरी विजय उन पैंतालीस करोड़ के कारण नहीं हो रही है। कुछ खास लोग हैं, जिनके त्याग-पुण्य से मैं जीत रही हूँ।' मैंने कहा - 'माँ, वे कौन लोग हैं?' उन्होंने कहा - 'वे हर शहर में हैं।' मैंने डरते-डरते पूछा - 'मेरे शहर में कोई है ?' भारत माता ने कहा - 'हाँ, तुम्हारे शहर में भी फर्म कुंदनलाल संपतलाल के मालिक कंचन बाबू हैं।' दोस्त, इतना कहकर भारत माता तो चली गई और मैं सुबह तक सोचता रहा कि अपने कंचन बाबू देश के लिए ऐसा क्या कर रहे हैं कि उनका नाम भारत माता की जबान पर आ गया है। मुझे बड़ी उत्सुकता है। तुम मुझे फौरन उनके बारे में पता लगाकर लिखो।

कंचन बाबू मशहूर आदमी हैं। चौक में उनकी दूकान है। वह अब रॉटरी क्लब और लॉयंस क्लब के सदस्य भी हो गए हैं। पिछले दिनों से मैं उनका नाम ज्यादा सुनने लगा था। मगर मेरे लिए भी यह आश्चर्य की बात थी कि उनका नाम भारत माता विदेश में लेती हैं।

मैं सुबह उनसे मुलाकात करने चला। चौक के इस तरफ के चौराहे पर भीड़ दिखी। कंचन बाबू का नाम भी सुन पड़ा। झाँककर देखा कि कंचन बाबू जूतों पर पॉलिश कर रहे हैं। पास ही एक तख्ती रखी है, जिस पर लिखा है - 'देश-रक्षा के लिए पॉलिश कराइए। पॉलिश की सारी आमदनी राष्ट्रीय सुरक्षा-कोष में जाएगी। पॉलिश करते हुए कंचन बाबू अच्छे लग रहे थे। वे दूकान पर इतने अच्छे नहीं लगते थे, जितने यहाँ। हो सकता है, देश प्रेम की भावना उन्हें तेज दे रही हो। यह भी हो सकता है कि उन्होंने सही धंधा अब पाया हो।

वहाँ बात करने का मौका नहीं था। वे बहुत व्यस्त थे। ऐसा लगता था, जैसे भारतीय फौज मोर्चे पर खड़ी इंतजार कर रही है कि कब कंचन बाबू पॉलिश करके तेरह पैसे उसे भेजें और वह उसकी गोली खरीदकर दुश्मन पर दागे। लगता था, वे सारे भारतीय फौज का खर्च पूरा कर रहे हैं और सिर्फ उनका खयाल करके फौज लड़ रही है। मैं डरा कि इस वक्त इन्हें छेड़ने से कहीं अपनी फौज का गोला-बारूद कम न पड़ जाए।

मैं शाम को उनके घर गया। मैंने कहा - कंचन बाबू, आपका नाम भारत माता विदेश में ले रही हैं।

- तुमसे किसने कहा ? क्या भारत माता से तुम्हारा भी कोई संबंध है?

- नहीं, कंचन बाबू, मैंने तो उनकी सिर्फ जय बोली है। मगर आपके प्रति उनकी विशेष ममता है। विदेश में मेरे एक दोस्त को उन्होंने सपने में बताया कि जिन कुछ लोगों के त्याग और पुण्य से उनकी जीत हो रही है, उनमें आप भी हैं।

कंचन बाबू सकुचा गए। बोले - अरे भई, यह तो उनकी कृपा है, मुझ क्षुद्र का नाम याद रखती हैं। इधर ये इनकम-टैक्स वाले हैं कि हर बार उन्हें खुश रखता हूँ, और वे हर बार भूल जाते हैं। पता नहीं, भारत माता इनकम-टैक्स का महकमा बंद क्यों नहीं कर देती!

मैंने कहा - आपसे वे खुश हैं। उनसे कहिए न!

वह बोले-हाँ, मुझे मिले, तो मैं उनसे कहूँ कि माता, तुम्हारे इतने महकमे चलते हैं, इस एक को बंद ही करा दीजिए न। नए इनकम-टैक्स अफसर को तो उनसे कहकर बरखास्त करा दूँगा।

मैंने कहा-कंचन बाबू, आपने देश-सेवा का यह तरीका क्यों अपनाया - यही पॉलिशवाला ?

वह बोले - देश की पुकार मेरी आत्मा में गूँज उठी और मैंने प्रण किया कि मातृभूमि के लिए मैं पॉलिश करूँगा। मैं हफ्ते में दो दिन दो घंटे पॉलिश करता हूँ और सारी आमदनी सुरक्षा कोष में दे देता हूँ। मैं यह सिलसिला जारी रखूँगा। एक बार जो चीज उठा ली, उसे मैं जल्दी नहीं छोड़ता। एक बार वनस्पति घी की एजेंसी ले ली तो अभी तक चल रही है।

मैं उनकी तरफ देख रहा था। वे नजर बचा रहे थे। बचाते-बचाते भी नजर मिल गई तो मैं हँस पड़ा। वे भी हँस दिए। बोले - तुम्हें भरोसा नहीं हुआ। अच्छा, सच बताऊँ?

- हाँ, बिलकुल सच।

- तो सुनो। यार, ये तुम्हारे चंदेवाले बहुत तंग करते थे।

- कौन चंदेवाले ?

- अरे, यही राष्ट्रीय सुरक्षा-कोपवाले। यों तो हम चंदेवालों के मारे हमेशा परेशान रहते हैं, रोज की कोई चंदा लगा रहता है - कभी गणेशोत्सव है तो कभी दुर्गोत्सव, कभी विधवाश्रमवाले आ जाते हैं, तो कभी अनाथालयवाले। अब ये राष्ट्रीय सुरक्षा-कोपवाले आने लगे हैं।

- मगर कंचन बाबू, अनाथालय का चंदा और राष्ट्रीय सुरक्षा-कोप क्या एक-से हैं?

- भई, अपने लिए तो एक ही है। चंदा चंदा सब एक। मुझे तो ऐसा लगता है कि एक बड़ा अनाथालय है। अनाथालय के लड़के बैंड बजाकर चंदा मांगते हैं और ये देशवाले नारे लगाकर। वे अनाथों की परवरिश के लिए माँगते हैं और ये देश की परवरिश के लिए। अच्छा, फिर दूसरों को तो रूपया-दो रूपया देकर टाला जा सकता है, पर ये देश-रक्षा वाले तो बहुत मुँह फाड़ते हैं। कहते हैं - 'दो हजार दीजिए, तीन हजार दीजिए।'

उन्होंने मेरी तरफ देखा। मैं चुप रहा। उन्हें अब प्रश्न की जरूरत नहीं थी। वे समझाने लगे - तो मैंने उन लोगों से कहा कि भैया, देश की रक्षा करना है, तो यह तो मैंने माना। पर जरा किफायत से करो न ! देश-रक्षा क्या किफायत में नहीं हो सकती ? ज्यादा खर्च होता हो तो कह दो कि भाई, इस भाव में हमको पूरा नहीं पड़ता। वे क्या जवाब देते हैं। कहते हैं - कंचन बाबू, देश-रक्षा में किफायत नहीं देखी जाती। देश-प्रेम कोई धंधा नहीं है। अच्छा भाई, ठीक है। जैसे-तैसे ये गए, तो दूसरे आ गए। कहने लगे - 'मजदूर भी महीने में एक दिन का वेतन सुरक्षा-कोप में दे रहे हैं। आप भी महीने में एक दिन की आमदनी दीजिए।' मैंने कहा - 'देशभक्तों, मैं अगर मजदूर सरीखा करने लगूँगा, तो मैं भी किसी दिन मजदूर हो जाऊँगा। वे टले, तो तीसरा' गिरोह आ गया। ये जरा तेज लोग थे। रिकॉर्ड बगैरह देखकर आए थे। आते ही उन्होंने गोली दाग दी - 'कंचन बाबू, दूसरे महायुद्ध में आपकी दूकान से अंग्रेज सरकार को दस हजार रूपए वार-फंड में दिए गए थे। जब आपने ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा के लिए इतना दिया तो अपने देश की रक्षा के लिए पाँच हजार तो दीजिए।' देखो, कैसी पकड़ की है। दूसरा होता, तो चित हो जाता। पर मैं कंचन कुमार हूँ। मैंने जवाब दिया - 'देखो भई, लड़ाई कमाने का मौका है, गँवाने का नहीं। दूसरे महायुद्ध में हमारे पिताजी बन गए थे। दस लाख कमाया तो दस हजार दे भी दिया। लो साहब, और एकाध साल लड़ाई चलाओ। अब अठारह साल में यह एक ढंग की लड़ाई छिड़ी है। पर आठ दिन भी नहीं हुए कि आप मांगने आ गए। और तुम्हारे देश की लड़ाई से कुछ कमा लें, तो तुम्हें भी दे देंगे।'

वे रुके तो मैंने कहा - मैं यह जानना चाहता हूँ कि यह पॉलिश करने की बात आपको कैसे सूझी ?

उन्होंने कहा - वही बता रहा हूँ। तो मैं इन चंदेवालों से परेशान था। इसी बीच मेरा लड़का आया। वह लखनऊ विश्वविद्यालय में पढ़ता है। उसने कहा कि मुझे भी होस्टल के लड़के बहुत तंग करते थे। कहते कि तुम जेब-खर्च में से बचाकर आधा राष्ट्रीय सुरक्षा-कोप में दो। मैंने सोचा, आधा जेब-खर्चा इन्हें दे दूँ तो जिंदगी का मजा ही किरकिरा हो जाएगा। एक रात मुझे तरकीब सूझ गई। दूसरे दिन इतवार था। मैं पॉलिश करके सुरक्षा-कोष के लिए पैसा इकट्ठा करूँगा। बस, फिर क्या था ! पैसा भी बचा और लड़के जय भी बोलने लगे। यार, तुम्हारी यह नई पीढ़ी है तेज। कैसे क्रांतिकारी विचार आते हैं इसके दिमाग में। हम लोगों का नेतृत्व यही क्रांतिकारी पीढ़ी करेगी। बस मैंने लड़के को गुरू माना और यह पॉलिशवाला काम शुरू कर दिया। लोग मेरी बड़ी तारीफ करते हैं। कहते हैं 'देखो, इतना बड़ा आदमी

होकर देश के लिए पॉलिश कर रहा है।' मैंने लोगों के दृष्टिकोण में ही क्रांति कर दी है।

मैंने पूछा - और राष्ट्रीय सुरक्षा-कोषवाले ?

उन्होंने कहा - वे मुझसे अब चंदा नहीं माँगते हैं। अब तो मैं उनके मुर्दाबाद के नारे लगवा सकता हूँ।

मैंने यह सारा हाल लिखकर अपने प्रवासी मित्र को भेज दिया है। साथ ही यह भी लिख दिया दोस्त, अगर दुबारा भारत माता तुम्हारे सपने में आएँ तो जरा ध्यान से देखना। बात यह है कि इधर दुश्मन के घुसपैठिये स्त्री का वेश धारण कर घुस आते हैं। मुझे शक है, वे सपने में भी घुसने लगे हैं।

निठल्ले की डायरी

डॉ. शैलेश त्रिपाठी की कुछ कविताएं

सहायक हिन्दी अधिकारी,
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

(1)

संवेदनाओं की भाषा में
पहले मैं
प्रेम को प्रेम और डर को डर
कहा करता था।
सोच की परिपक्वता ने
प्रेम और डर के मांयने बदल दिए
अब मैं डर को प्रेम
और प्रेम को डर
कहता हूँ।

(2)

स्मृतियों के पोखर से
चन्द मछलियां निकल गयी
उनके समय का चुनाव गलत था
जब वो निकली, मैं रेत पर खड़ा
सपनों का घरौंदा बना रहा था
बिखरा घरौंदा, मरी वे भी।

(3)

कच्ची मिट्‌टी को घड़ा बनाते वक्त
कुम्हार से न जाने कहां गलती हुई
उसे अहसास हुआ तब जब
खरीदार ने कहा यह तो फूटा है।
मेरी ही गलती कर गया
कुम्हार भी .....
कुम्हार ने घड़े को और मैं
प्रेम को.....
हवा के हस्तक्षेप से मुक्त न रख सके।

(4)

तू! तो हंस कर चला गया
पर दे गया चिर व्यथा का भार
एक बार फिर से .....
उभर आये है, फिर हृदय में
वही जीर्ण शूल.....
एक बार फिर से .....
अपनें इस अशांत मन का
खोलू मैं रहस्य किस से?
तू मिला तो सोचा कह दूगां,
हृदयाभार।
पर वक्त नें धोखा दिया
एक बार फिर से .....
ये मेरे अतीत का खेल है
वक्त तो छिनता गया, और मैं छिना
एक बार फिर से .....
इक अतीतजीवी की तरह क्यों दोष दू
अतीत को
हर बार धोखा दिया है वर्तमान ने
एक बार फिर से ....
तेरे कारण मन व्यथित था, हृदय में
प्रज्ज्वलित थी दावानल
और चक्षुओं से बही है, हृदय की
व्यथा
एक बार फिर से .....

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला : अनूठे सरस्वती पुत्र

विश्वनाथ त्रिपाठी

निराला का जन्मदिवस वसंत-पंचमी को मनाया जाता है। लोगों ने मान लिया है कि किसी और दिन उनका जन्म हो ही नहीं सकता था। वसंत-पंचमी के दिन सरस्वती की पूजा होती है। निराला सरस्वती के वरद पुत्र थे। सरस्वती साधक थे। खड़ी-बोली हिंदी में सरस्वती पर जितनी कविताएं निराला ने लिखी है किसी और कवि ने नहीं।

उन्होंने सरस्वती को अनेक अनुपम एवं अभूतपूर्व चित्रों में उकेरा है। उन्होंने सरस्वती के मुखमंडल को करुणा के आंसुओं से धुला कहा है। यह सरस्वती का नया रुप है। उन्होंने किसानों की सरस्वती की प्रतिष्ठा की है। जिस तरह तुलसी ने अन्नपूर्णा को राजमहलों से निकालकर भूखे-कंगालों के बीच स्थापित किया उसी तरह निराला ने सरस्वती को मंदिरों, पूजा-पाठ के कर्मकांड से बाहर लाकर खेतों-खलिहानों में श्रमजीवी किसानों के सुख-दुख भरे जीवन क्षेत्र में स्थापित किया –

हरी-भरी खेतों की सरस्वती लहराई
मग्न किसानों के घर उन्मद बजी बधाई

बधाई बजने के पहले शीत का प्रकोप भी सरस्वती की ही माया में अंकित है –

प्रखर शीत के शर से जग को बेधा तुमने
हरीतमा के पत्र-पत्र को छेदा तुमने
शीर्ण हुई सरिताएं साधारण जन ठिठुरे
रहे घरों में जैसे हों, बागों में गिठुरे
छिना हुआ धन, जिससे आधे नहीं वसन-तन
आग ताप कर पार कर रहे गृह-जीवन।

सरस्वती का साधक बनना सफलता की साधना नहीं है। निराला का कवि-जीवन प्रकट करता है कि सफलता और सार्थकता समानार्थक नहीं हैं। विषम-समाज में सफल व्यक्ति प्रायः सार्थक नहीं होते। सफलता नजी जीवन तक सीमित होती है। सार्थकता का संदर्भ सामाजिक एवं व्यापक मूल्यों का क्षेत्र है। सरस्वती भाषा की देवी हैं। वाणी हैं। वाणी सामाजिक देवी है। वे शब्दों को सिद्धि देती हैं।

कवि सरस्वती की साधना करके शब्दों को अर्थ प्रदान करता है। उन्हें सार्थक बनाता है। वस्तुतः शब्द ही कवि की सबसे बड़ी संपत्ति हैं और उसी संपत्ति पर कवि को सबसे अधिक भरोसा होता है। तुलसी ने लिखा था – 'कविहिं अरथ आखर बल सांचा' कवि को अर्थ और अक्षर का ही सच्चा बल होता है।

लेकिन शब्दार्थ पर यह विश्वास कवि को कदम-कदम पर जोखिम में डालता है। सफल साहित्यकार इस जोखिम में नहीं पड़ते। वे शब्दों की अर्थवत्ता का मूल्य नहीं चुकाते। सरस्वती के साधक पुत्र यह जोखिम उठाते हैं और शब्दों के अर्थ का मूल्य चुकाते हैं। और वही उनकी शब्द-साधना को मूल्यवान बनाता है। निराला का जीवन मानो इस परीक्षा की अनवरत यात्रा है। उसमें से अनेक से हिंदी समाज परिचित है और अनेक से अभी परिचित होना बाकी है। एक उदाहरण मार्मिक तो है ही, मनोरंजक भी है।

कहते हैं, एक वृद्धा ने घनघोर जाड़े के दिनों में निराला को बेटा कह दिया। वृद्धाएं प्रायः युवकों को बेटा या बच्चा कहकर संबोधित करती है। वह वृद्ध तो निराला को बेटा कहकर चुप हो गई लेकिन कवि निराला के लिए बेटा एक अर्थवान शब्द था। वे इस संबोधन से बेचैन हो उठे। अगर वे इस बुढ़िया के बेटा हैं तो क्या उन्हें इस वृद्धा को अर्थात् अपनी मां को इस तरह सर्दी में ठिठुरते छोड़ देना चाहिए। संयोग से उन्हीं दिनों निराला ने अपने लिए एक अच्छी रजाई बनवाई थी। उन्होंने वह रजाई उस बुढ़िया को दे दी। यह एक साधारण उदाहरण है कि शब्दों को महत्व देने वाला कवि शब्दार्थ की साधना जीवन में कैसे करता है।

यह साधना केवल शब्द पर ही विश्वास नहीं पैदा करती है, वह आत्मविश्वास भी जगाती है। जिन दिनों निराला

इलाहाबाद में थे। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के यशस्वी वाइस चांसलर अमरनाथ झा भी वहीं थे। शिक्षा, संस्कृति और प्रशासकीय सेवाओं के क्षेत्र में अमरनाथ झा का डंका बजता था। उनका दरबार संस्कृतिकर्मियों से भरा रहता था।

अमरनाथ झा ने निराला को पत्र लिखकर अपने घर पर काव्य पाठ के लिए निमंत्रित किया। पत्र अंग्रेजी में था। निराला ने उस पत्र का उत्तर अपनी अंग्रेजी में देते हुए लिखा - आई एम रिच ऑफ माई पुअर इंग्लिश, आई वाज ऑनर्ड बाई योर इनविटेशन टू रिसाइट माई पोयम्स एट योर हाउस। हाओ एवर मोर आनर्ड आई विल फील इफ यू कम टू माई हाउस टू लिसिन टू माई पोयम्स। (मैं गरीब अंग्रेजी का धनिक हूं। आपने मुझे अपने घर आकर कविता सुनाने का निमंत्रण दिया मैं गौरवान्वित हुआ। लेकिन मैं और अधिक गौरव का अनुभव करूंगा यदि आप मेरे घर आकर मेरी कविता सुनें)।

निराला तो कहीं भी, किसी को भी कविता सुना सकते थे लेकिन वे वाइस चांसलर और अपने घर पर दरबार लगाने वाले साहित्य संरक्षक के यहां जाकर अपनी कविताएं नहीं सुनाते थे। यह शब्दार्थ का सम्मान, सरस्वती की साधना का सच्चा रूप था।

कहते हैं, एक बार ओरछा नरेश से अपना परिचय देते हुए निराला ने कहा, 'हम वो हैं जिनके बाप-दादों की पालकी आपके बाप-दादा उठाते थे।' यह कवि की अपनी नहीं बल्कि कवियों की परंपरा की हेकड़ी थी और निराला उस पारंपरिक घटना स्मृति का संकेत कर रहे थे, जब सम्मानित करने के लिए छत्रसाल ने भूषण की पालकी स्वयं उठा ली थी।

हिंदी साहित्य में ऐसे कवियों की परंपरा है जिसके श्रेष्ठ वाहक कबीर, तुलसी और सूरदास हैं। रीतिकालीन कवियों में भी अनेक ने यह जोखिम उठाया है। गंग कवि को तो जहांगीर ने हाथी के पैरों तले कुचलवा ही दिया था।

निराला जैसे कवि के व्यक्तित्व को हम आज के परिदृश्य में कैसे देखें। पहली बात तो मन में यही आती है कि राजनीतिक रूप से स्वतंत्र होने के बाद कितनी तेजी से हम सांस्कृतिक दृष्टि से पराधीन हो गए हैं। यह ऐतिहासिक विडंबना अब अबूझ नहीं रह गई है। साफ दिखलाई पड़ रही है। एक ओर देश के प्रायः सभी सांस्कृतिक मंचों पर अंतर्राष्ट्रीय पूंजीवादी अपसंस्कृति का कब्जा बढ़ता जा रहा है और उससे भी यातनाप्रद स्थिति यह है कि हम उससे उबरने का कोई उद्योग नहीं कर रहे हैं। बाहरी तौर पर देखने से स्थिति बड़ी चमत्कारी और सुखद लगती है। जिस तरह हम गांधी की तुलना आज के नेताओं से करने पर विक्षुब्ध और किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाते हैं, उसी तरह आज के हिंदी साहित्यकारों की तुलना निराला से करने पर हम विक्षुब्ध और किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाते हैं।

साभार - पूर्वांचल प्रहरी

बेटियाँ

अंशु कोशले
कक्षा : सात
केन्द्रीय विद्यालय, दुलियाजान

ओस की बूँदों सी होती हैं बेटियाँ।
पापा की दुलारी और जान से प्यारी होती हैं बेटियाँ।
माँ-बाप के दर्द में हमदर्द होती हैं बेटियाँ।
हीरा अगर है बेटा तो सच्ची मोती है बेटियाँ।
कहने को परायी अमानत है बेटियाँ,
पर बेटो से भी अपनी होती है बेटियाँ।

हिंदी के लेखक की रेटिंग

सुधीश पचौरी

हिंदी में या तो प्रासंगिकता ढूंढ़ी जाती है, या समकालीनता, या सामयिकता! हिंदी की थकान का, उसकी बोरियत का यही कारण है। वह या तो प्रासंगिकता का रोना रोती है, या समकालीनता का पुराना-धुराना कालीन बिछाती रहती है।

पिछले 30 बरस की गोष्ठियों, सेमिनारों के टापिक उठा लीजिए - कहीं कोई प्रेमचंद की प्रासंगिकता के बहाने खुद की अप्रासंगिकता को ही प्रासंगिक बनाए जा रहा है। कोई मुक्तिबोध की प्रासंगिकता को बताता हुआ अपनी प्रासंगिकता बताने में लगा है। कोई कबीर की समकालीनता, या निराला की प्रासंगिकता ढूंढ़ता हुआ अपने कालीन को रफू करता रहता है। अंग्रेजी का 'रलेवेंट' हिंदी में 'प्रासंगिक' बनाकर ठेला गया है। अंग्रेजी हमें 'रलेवेंट' दे भूल गई, हिंदी वाला अभी तक 'प्रसंग' खोजता रहता है।

जो भाषा प्रासंगिकता की जगह एक ठो नया शब्द तक न खोज सकी हो, वह स्वयं कब तक 'प्रासंगिक' रहेगी ? याद रहे कि 'प्रसंग' का सगा भाई 'संदर्भ' है - बचपन से ही हिंदी के विद्यार्थी को 'प्रसंग' और 'संदर्भ' खूब रटाए जाते हैं, लेकिन पीएचडी तक किसी को क्लेरिटी नहीं आ पाती कि 'प्रसंग' क्या बला है और 'संदर्भ' क्या चीज है ?

इससे पहले कि हिंदी अपनी प्रासंगिकता खोजते-खोजते अपने आपको 'खो' देने लायक बन जाए, मैं एक आइडिया दे रहा हूं, ताकि वह प्रसंगबाजी से ऊपर उठे और कुछ 'बक्से के बाहर' यानी 'आउट आफ बाक्स' सोचना शुरू करे।

मेरा मानना है कि अगर हिंदी लेखक की रेटिंग तय होने लगे, तो उसकी आधी से अधिक समस्याएं हल हो जाएंगी। प्रासंगिकता का पल्ला छूट जाएगा और लेखक का रेट तय हो जाएगा। एक फायदा यह होगा कि हम भी अंग्रेजी की तरह दुनिया को बता सकेंगे कि हिंदी का इस महीने का टाप रेटिंग का लेखक यह है। साल का नंबर वन लेखक वह है। हम चाहें, तो 'सप्ताह के लेखक' की रेटिंग भी तय कर सकते हैं। हर सप्ताह एक लेखक का रेट ऊपर चढ़ेगा और उतरेगा। लेखक 'सेनसेक्स' होगा। वह सुबह-दोपहर-शाम चढ़ा-उतरा करेगा।

दूसरा फायदा यह होगा कि हिंदी को बहुत से निकम्मे विशेषणों से निजात मिल जाएगी जैसे 'ये महान हैं', 'वे मूर्धन्य हैं', 'ये ऐतिहासिक हैं', 'ये वरिष्ठ हैं' 'वे जाने-माने हैं' 'ये प्रख्यात हैं' और 'वे सुप्रसिद्ध हैं'। ये ऐसे शब्द हैं, जिनसे सुनने वाले को लगता है कि वह सचमुच 'महान' है। 'जाना' तो है ही, 'माना' भी है और 'ख्यात' से आगे 'प्रख्यात' हुआ पड़ा है, व 'सिद्ध' ही नहीं, प्रसिद्ध तो है ही, 'सुप्रसिद्ध' भी है।

ऐसे खाली-पीली विशेषणों के तूमार बांधने की आदत के कारण हिंदी का लेखक हमेशा 'ओवर रेटेड' नजर आता है। जैसे वे अद्भुत हैं, अन्यतम हैं, युगांतकारी हैं, अनिवार्य हैं, उनका योगदान ऐतिहासिक है। यह सब मन के मोदक हैं। हिंदी वाले मनमोदक से जीते हैं, आंकड़ों से नहीं। रेटिंग होगी, तो आकंड़े होंगे।

कौन-सा लेखक ? कौन-सी किताब ? कितनी बिकी ? कितनी पढ़ी गई ? कितनी उद्धृत हुई ? इन सबके आकंड़े हों और लेखक की रेटिंग बने, तो क्या कहने ! हिंदी वाला एकदम अंतर्राष्ट्रीय हो जाएगा।

यह फिल्मी समीक्षाओं से सीखा जा सकता है। वहां रेटिंग होती है। किसी को पांच में से चार सितारे दिए जाते हैं, किसी को तीन, किसी को दो, किसी को एक, आधा भी दिया जाता है।

रेटिंग आएगी, तो सारी महानता-वहानता झड़ जाएगी। जो लिखेगा, जो बिकेगा, सो दिखेगा फालतू का क्या काम ?

(लेखक साहित्यकार हैं।)

साभार - दैनिक पूर्वोदय

भाषाओं से बनती बिगड़ती सियासत और सरहदें

गार्गी चटर्जी

संयुक्त राष्ट्र 21 फरवरी को अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाता है। 21 फरवरी 1952 को पुलिस ने ढाका में उन छात्रों पर फायरिंग की थी, जो उर्दू को राष्ट्रीय भाषा के रूप में थोपने के खिलाफ थे। विज्ञापन अब्दुस सलाम, रफीकउद्दीन अहमद, अब्दुल बरकत और अब्दुल जब्बार मारे गए, इसने उस प्रांत की बांग्ला भाषाई पहचान के आधार पर आजादी के बीज बोए, जिसने सिर्फ छह साल पहले धार्मिक पहचान के आधार पर पाकिस्तान के हक में वोट दिया था। आखरि 1971 में इसी संघर्ष से बांग्लादेश अस्तित्व में आया। 19वीं सदी के हिंदी-उर्दू विवाद में मौजूदा भारतीय राज्य की नींव पड़नी शुरू हुई थी। हिंदुस्तानी इलाके के शहरी हिंदू (मोटे तौर पर ऊपरी और मध्य गंगा के मैदानों वाले) उर्दू हटाने के पक्षधर थे, यानी नस्तालिक स्क्रिट में लिखी जाने वाली फारसी आधारित हिंदुस्तानी को सरकारी भाषा रखने के बजाय वो संस्कृत आधारित देवनागरी स्क्रिप्ट वाली हिंदी लाना चाहते थे। उर्दू और हिंदी, मुस्लिम और हिंदू लामबंदी की नुमाइंदगी करने लगीं। इस दौरान हिंदी की बढ़ोत्तरी बेहद अहम हो गई। संभ्रांत हिंदुओं ने हिंदुस्तानी भाषी इलाके की कई भाषाओं (जैसे अवधी, भोजपुरी, राजस्थानी और ब्रज आदि) को राजनीतिक तरकीब के तहत नाममात्र के लिए हिंदी से जोड़ दिया, जिन्हें हिंदी में गिना तो गया, पर वो हिंदी भाषाएं नहीं थीं और जिसके दूरगामी नतीजे होने थे। जहां तक ब्रितानियों के सामने सिफारिश की बात थी तो उनकी ये तरकीब कामयाब रही। हिंदी को सरकारी भाषा का दर्जा मिला जो पहले से उर्दू के पास था। हिंदी आंदोलन की लामबंदी के दो अहम मुद्दे थे। पहला, उर्दू को सरकारी दर्जा देने से हिंदी वाले नौकरियों में पिछड़ गए थे। दूसरे, सरकारी कागजों जैसे उर्दू में लिखे अदालती दस्तावेज, गैर उर्दू भाषियों की समझ से परे थे। विडंबना यह है कि बंटवारे के बाद गैर हिंदी भाषियों को विरासत में वो तमाम समस्याएं मिली हैं, जो 19 वीं सदी में हिंदी के साथ थीं। भारत सरकार गैर हिंदी मातृभाषा में ज्यादातर अकादमिक और प्रोफेशनल परीक्षाएं (जैसे आईआईटी और एम्स प्रवेश परीक्षा) देने की इजाजत नहीं देती। इलाहाबाद हाईकोर्ट को अपना कामकाज हिंदी में करने की इजाजत है पर मद्रास हाईकोर्ट को तमिल में कामकाज की इजाजत नहीं। सरकारी तौर पर भारतीय संविधान सिर्फ हिंदी और अंग्रेजी में ही है। 1947 के बाद 26 जनवरी 1965 तक हिंदी को अकेली सरकारी भाषा बनाने की हिंदुस्तानी राजनीतिक योजनाओं का गैर हिंदीभाषी इलाकों में विरोध होने लगा था। मौजूदा तमिलनाडु में नौजवानों के नेतृत्व में जनांदोलन उठा। सरकार ने तमिलनाडु में सेना और केंद्रीय पुलिस बल भेजकर विरोध को हिंसात्मक ढंग से दबाने की कोशिश की। सैन्यबलों की कारवाई में 63 प्रदर्शनकारी मारे गए-गैरसरकारी तौर पर सैकड़ों। विरोध के चलते हिंदी के साथ अंग्रेजी अनिश्चितकाल के लिए सरकारी भाषा हो गई। 1956 से ही अकेडमी ऑफ तेलुगु के हिंदी विरोधी सम्मेलन जारी थे। इसी तरह, हिंदुस्तानी इलाकों में पहले संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी और फिर जनसंघ अंग्रेजी के खिलाफ छिटपुट प्रदर्शन कर रहे थे। 1965 में एकमात्र सरकारी भाषा की योजना पूरी तरह ढह गई। इसी तरह श्रीलंका में सिंहला को प्रमुखता देना बाद में तमिल ईलम की मुक्ति के कारणों में एक बना। पाकिस्तान में सिंध और बलोचिस्तान पर पहले ही उर्दू थोपी जा चुकी थी। सिंधी और बलोच राष्ट्रवादियों को इससे काफी बल मिला। उपमहाद्वीप में भाषाई आंदोलनों को सिर्फ हिंदी-उर्दू और हिंदी-तमिल संघर्ष के आइने में नहीं देख सकते। बंटवारे के बाद जब असम के बंगालीबहुल कचार जिले में असमिया को कानूनी तौर पर अकेली सरकारी भाषा बनाया गया तो विरोध शुरू हो गया। विरोध के केंद्र सिलचर में असम राइफल्स, मद्रास रेजीमेंट और दूसरे सुरक्षाबलों ने फ्लैग मार्च किया। 19 मई 1961 को विरोध में रखी गई हड़ताल के दिन सुरक्षाबलों ने 11 बांग्ला

प्रदर्शनकारियों को मार दिया। इनमें सिलचर रेलवे स्टेशन के पास मारी गई 16 साल की लड़की कमला भट्टाचार्य भी थी। इसके बाद कचार में बांग्ला को सरकारी भाषा मान लिया गया। झारखंड आंदोलन शुरू में सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक और भाषाई अधिकारों के लिए वाम-राष्ट्रवादी लामबंदी थी, झारखंड राज्य को जानबूझकर आदिवासी अल्पसंख्यकों के आधार पर बनाया गया, ताकि वहां मौजूद बाहरी लोगों और आर्थिक रूप से मजबूत लोगों के हित बचाए जा सकें। बाकी ज्यादातर सरकारी उद्देश्यों के लिए यह हिंदी राज्य ही है। गोंडी भाषा और संचार में माओवादियों का निवेश अहम है और दकन में सत्ता के उनके आधार के लिए बहुत जरूरी भी है, जो गोंडी भाषा-भाषी इलाके से होकर गुजरता है। छत्तीसगढ़ में सरकार प्राथमिक शिक्षा के बहाने गोंडी बोलने वाले बच्चों पर हिंदी थोपती है और इस तरह गोंडों को उनकी अपनी संस्कृति और समाज से दूर करती है। प्राथमिक शिक्षा के औजार का रणनीतिक ढंग से इस्तेमाल नई करूर 'सुरक्षा' ईजाद है। जिसे गलती से हिंदी बेल्ट कहते हैं, वहां कई भाषाई आंदोलन उमड़ रहे हैं। इनमें हरेक अपनी पहचान चाहता है और हिंदी बोलने वालों में गिनती नहीं कराना चाहता। भोजपुरी और राजस्थानी भाषा आंदोलन इनमें सबसे आगे हैं। उम्मीद है कि 21 फरवरी इन मातृभाषा संघर्षों को ऐसी दुनिया के संकेत के रूप में रेखांकित करे, जहां 'राष्ट्रीय' एकता के बहाने कोई एक भाषा न थोपी जाए बल्कि जहां सभी मातृभाषाओं और उनके बोलने वालों को समान अधिकार हासिल हों।

साभार - सेन्टिनल

शिक्षक का महत्त्व

सुहानी सरोज
कक्षा : VI (C)
केन्द्रीय विद्यालय, दुलियाजान

माताएं जीवन देती है,
तब पिता सुरक्षा करते हैं।
लेकिन सच्ची मानवता,
शिक्षक जीवन में भरते हैं।

सत्य न्याय के पथ पर चलना,
माता-पिता हमें सीखाते हैं।
लेकिन जीवन के संघर्ष से
लड़ना शिक्षक हमें सीखाते हैं।

ज्ञान दीप की ज्योति जलाकर
मन अवलोकित करते हैं।
विद्या का धन देकर शिक्षक
जीवन में सुख भरते हैं।

शिक्षक ईश्वर से बढ़कर है,
यह गीता बतलाती है।
क्योंकि शिक्षक ही भक्तों को
ईश्वर तक पहुँचाते हैं।

जीवन में कुछ पाना है,
शिक्षक का सम्मान करो।
शीश झुकाकर नम्र श्रद्धा से,
तुम उनको प्रणाम करो।

पुस्तकों की तिलस्मी दुनिया का सच

रवि अजीत

पुस्तकों का एक अलग संसार है, तिलिस्मी और अद्भुत किताबें पढ़ने और लिखने में एक रूहानी शुकुन मिलता है। पुस्तकें मित्र की तरह होती हैं, पवित्र, धार्मिक एवं अनुभव और अनुभूति से लबालब। इसके विराट सौंदर्य के आगे पूरी दुनिया नतमस्तक है, इसके अंदर एक अंदरूनी भूचाल है, जो पूरी दुनिया को बदल कर रख सकती है। पुस्तकों की छपाई भी एक कला है, जिसको जीविका का साधन बना कर, प्रकाशक नई-नई पुस्तकों का मुद्रण कर बाजार में उतारते हैं. इसी तरह से पुस्तकों के प्रति प्रेम को लोग अपने-अपने हिसाब और सहूलियत से प्रदर्शित करते हैं। कोई पुस्तकों की बिक्री करके तो कोई उसकी प्रदर्शनी लगा कर, तो कोई पुस्तकालय बना कर। बिना पुस्तक प्रेम के कोई भी पुस्तक की बिक्री या मुद्रण कर व्यापार नहीं कर सकता नई पीढ़ी ने पुस्तकों को एक नए अवतार में विकसित कर लिया है, जिसमें आनलाइन पुस्तकें, ई-पुस्तकें मुख्यतः हैं, जिसको युवा पीढ़ी इंटरनेट के जरिए उपभोग करती है। अगर गौर से देखा जाए, तब पाएंगे कि देश में उदारीकरण के पश्चात सामान्य उपभोग की वस्तुओं का बाजार सुलभ होने से पुस्तकों की दुकानों का सिमटना शुरू हो गया, जिससे पुस्तकों की दुकानों के सेल्फ में पाठ्य पुस्तकों के अलावा साहित्य, संस्कृति, दर्शन और इतिहास की पुस्तकों का नितांत अभाव दिखाई देने लगा। यह बाजारवाद को महामंडित करने की कवायद की एक कड़ी थी जिसमें देश भर की हजारों पुस्तकों की दुकानें इसकी भेट चढ़ गई। उपभोक्ता के लिए रोजमर्रा की जरूरत के सामानों की दुकानें हर गली और नुक्कड़ों पर धूम-धाम से खुलने लगी। पुस्तकों की दुकानों को लिए हुए लोगों को पुस्तकों के व्यापार में धीमेपन का अहसास होने लगा, जो विभिन्न कारणों से उत्पन्न हुआ था। कागज की बढ़ती कीमत, मार्केटिंग में हो रही असुविधा, अखबार की तरह किताबों पर किसी तरह की सरकारी रियायत का नहीं होना प्रकाशकों गैजेट्स का बाजार में आना कुछ एक कारण थे, जिससे पुस्तक प्रेमी विक्रेता क्षुब्ध हो रहे थे। अब कहानियों और किस्सों का भी बाजारीकरण हो गया है, जिसका सीधा प्रभाव दादी मां और नानी मां द्वारा सुनाई जाने वाली कहानियों पर पड़ने लगा है। एकल परिवार की स्थापना के पश्चात दादी मां की कहानियां बीते दिनों की बातें लगने लगी हैं। कम समय में पुस्तकों की सहज उपलब्धता भी एक कारण है। लोगों के पास दुकानें अब स्वयं चल कर आ गई हैं, जिसकी वजह से गांव में भी बैठा हुआ आदमी अपने फोन द्वारा अपनी पसंद की पुस्तकें मंगवा सकता है। फैंसी बाजार जैसे व्यापारिक इलाके में पहले चार-पांच पुस्तकों की दुकानें हुआ करती थीं। एक जमाने में अखबार घर, पुस्तक भंडार, असम हिंदी प्रकाशन, गोस्वामी इंटरप्राइसेस नाम की दुकानें यहां की नामी दुकानें थीं। इनमें 'अखबार घर' सबसे पुरानी दुकान थी, जिसको फैंसी बाजार निवासी दौलतराम गोस्वामी ने सन् 1937 में खोली थी। उनके पोते गोविंद गोस्वामी बताते हैं कि 'अखबार घर' फैंसी बाजार की सबसे पुरानी अखबार की दुकान थी, जहां हिंदी के प्रचार-प्रसार का कार्य होता था। कलकत्ते से छपने वाला दैनिक विश्वामित्र, पूर्वोत्तर के लिए यहीं से वितरित होता था। इसके अलावा अखबार घर में पाठ्यक्रम की पुस्तकें भी मिलती थीं। बाद में फैंसी बाजार के पुराने निगम मार्केट में सन् 1989 में आग लग जाने के बाद 'अखबार घर' नए बने मार्केट के प्रथम तल पर चली गई, जो आज 'अक्षर घर' के नाम से चलती है, और हिंदी के साहित्य और पाठ्यक्रम की पुस्तकों का प्रकाशन भी करती है। इसी तरह से पुस्तक भंडार और गोस्वामी इंटरप्राइसेस समय के साथ बंद हो गई। 'असम हिंदी प्रकाशन' के नाम से एक किताब की दुकान आज भी माछखोवा में चल रही है।

मैगजीन और अखबार की गुमटियां फैंसी बाजार में एक एम एस रोड के मुहाने पर, एक चाय गली के नुक्कड़ पर और एक एसआरसीबी रोड के जैन मंदिर के सामने स्थित है।

यहां के लोग अखबार और मैगजीन यहीं से खरीदते हैं। फैंसी बाजार के लोग अब पान बाजार जाते हैं अपनी किताबों के प्रति प्रेम की भूख मिटाने। इंटरनेट और आनलाइन स्टोर के खुलने से यहां के लोग वेबसाइट पर किताब की तस्वीर देख कर उनका आर्डर दे देते हैं। अक्षिता एक ऐसी ही किताबों की दीवानी है, जो हर हफ्ते अपने पाकेट मनी में से पैसे बचा कर फ्लिप्कार्ट से किताबें मंगवाती है। किताबों को संजोने का कार्य फैंसी बाजार स्थित श्री मारवाड़ी हिंदी पुस्तकालय ने भी किया है। उसके पास बीस हजार के करीब किताबें हैं, जिनमें कुछ पुरानी दुर्लभ पुस्तकें भी हैं। सन् 1925 में बने इस पुस्तकालय ने अब तक बखूबी हिंदी के प्रचार-प्रसार में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है। किताबें पढ़ने के लिए यह एक उपयुक्त स्थान है। एक सर्वेक्षण के अनुसार यह पाया गया कि 55 प्रतिशत लोगों को लगता है कि आनलाइन किताबें खरीदना बेहद आसान है, जबकि बाकी के लोगों को आनलाइन एक झंझट सा लगता है, क्योंकि वहां भुगतान की समस्या रहती है। भारत में करीब 25 करोड़ लोग इंटरनेट उपभोक्ता हैं, जिनमें सभी आनलाइन खरीदारी तो नहीं करते हैं, पर देखते जरुर हैं। ऐसा भी अनुमान है कि आने वाले दिनों में किताबें सिर्फ आनलाइन पर ही बिकेंगी। ई-बुक की अवधारणा अब नई नहीं है, शायद वक्त की चुनौती का जवाब बन गया है। युवा गजेट्स खरीद कर उसमें ई-बुक्स डाउनलोड कर रहे हैं, और अपनी सुविधानुसार उनको पढ़ने लगे हैं। इस उपलब्धता को पुस्तक-प्रेमी भले ही नकार दे, जिनका यह तर्क है कि ई-बुक्स में अनुभूति और अनुभव की महक नहीं रहती, जिससे पाठक लेखक के तिलिस्मी संसार में ठीक से पहुंच नहीं पाता, और पुस्तक के प्रति ठीक से न्याय नहीं कर पाता। पुस्तकों के संसार में नए प्रयोग भले ही अभी कुछ हास्यास्पद सा लगे, पर यह तय है कि तकनीक के अत्यधिक प्रयोग से सृजन की सुविधा बढ़ रही है, जिससे लेखकों की अपनी व्यापक पहचान के दायरे को बढ़ाने में भारी मदद मिली है।

साभार - दैनिक पूर्वोदय

अजनबी

सुनीता मलकानी

अजनबी तुम क्यूँ जानी पहचानी सी लगती हो
ख्वाहिशों की शाखों पे शबनबी तराने सी लगती हो
दूर से निहारती वो नजर तुम्हारी
बारिशों के पानी सी लगती हो
बिखरे से गेसूओं को बांध कर
शंकर की उमा सी सजती हो
पैरों में बांधे पायल की लड़ी
मोहन की राधा सी चलती हो
आस लिये बैठा मन एकाकी सा
दीप जलाये तुम धरा सी लगती हो
सुन ना पाता मन वाणी को जैसे
मौन व्यथा सी तुम कंठ पर सजती हो
नभ तल में खिल रहा सौन्दर्य तुम्हारा
गगन मृदु भरा स्पर्श पुलकित सा लगती हो
वीणा का तान लिये हृदय में मेरे
धारा के मझदार में माझी सी लगती हो
खोलो कभी मन के द्वार तो निहारो
अजनबी तुम नहीं थी कभी कहीं
तुम तो मेरी शब्दावली की रचना सी लगती हो।

ऑयल इंडिया लिमिटेड, पाइपलाइन मुख्यालय नराकास (उपक्रम) चल वैजयंती शील्ड द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित

दिसम्बर, 2015 की गुवाहाटी रिफाइनरी के प्रशिक्षण केन्द्र में आयोजित गुवाहाटी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) की 46वीं बैठक में ऑयल पाइपलाइन मुख्यालय को चल वैजयंती शील्ड द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। ज्ञातव्य हो कि 42 उपक्रम की सदस्यता वाली इस नराकास की अध्यक्षता गुवाहाटी रिफाइनरी के जिम्मे है जिसमें ऑयल इंडिया लिमिटेड पाइपलाइन मुख्यालय भी एक सदस्य है।

वर्ष, 2014-15 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने हेतु पाइपलाइन मुख्यालय को द्वितीय राजभाषा चल वैजयंती शील्ड प्रदान किया गया। पाइपलाइन मुख्यालय के उप प्रबंधक (राजभाषा) श्री नारायण शर्मा और कार्यालय सहायक श्री सुनील कुमार राय ने नराकास अध्यक्ष एवं कार्यकारी निदेशक (गुवाहाटी रिफाइनरी) श्री जे. बरपुजारी से उक्त शील्ड और प्रशस्ति पत्र ग्रहण किया। उक्त अवसर पर राजभाषा प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया था। राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, पूर्वोत्तर क्षेत्र के अनुसंधान अधिकारी एवं कार्यालय प्रमुख श्री बदरी यादव ने प्रदर्शनी का विधिवत उद्घाटन किया। नराकास के इस बैठक में राजभाषा विभाग, हिन्दी शिक्षण योजना के सहायक निदेशक डॉ बी. एन. पाण्डेय ने भारत सरकार की हिन्दी शिक्षण-प्रशिक्षण योजना पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ के अलावा पारंगत पाठ्यक्रम पढ़ाये जाने की भी जानकारी दी और आग्रह किया कि अधिक से अधिक संख्या में लोगों को प्रशिक्षण दिया जाय।

राजभाषा प्रदर्शनी में (बायें से दायें) सर्वश्री एन. के. चक्रवर्ती, उप महाप्रबंधक (गुवाहाटी रिफाइनरी),

डॉ. बी. एन. पाण्डेय, सहायक निदेशक, हिन्दी शिक्षण योजना, बदरी यादव, अनुसंधान अधिकारी एवं कार्यालय प्रमुख, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय पूर्वोत्तर क्षेत्र एवं नारायण शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा) पा. ला. परिलक्षित हो रहे हैं।

कार्यकारी निदेशक, गुवाहाटी रिफाइनरी एवं अध्यक्ष नराकास (उपक्रम) गुवाहाटी श्री जे. बरपुजारी से चल वैजयंती द्वितीय राजभाषा शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र ग्रहण करते हुए उप प्रबंधक (राजभाषा) पा. ला. श्री नारायण शर्मा एवं कार्यालय सहायक श्री सुनील कुमार राय।

ऑयल पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा तृतीय राजभाषा पुरस्कार प्रदान

दिनांक 21 जनवरी, 2016 को रांची के (RDCIS), सेल ऑडिटोरियम, इस्पात भवन, दोरंडा में पूर्व तथा पूर्वोत्तर क्षेत्र के संयुक्त राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता भारत सरकार के राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय की संयुक्त सचिव श्रीमती पूनम जुनेजा ने किया। विभिन्न कार्यक्रमों के साथ आयोजित इस समारोह में पूर्व तथा पूर्वोत्तर क्षेत्रों के राज्यों में अवस्थित सरकारी कार्यालयों, उपक्रमों, बैंकों आदि में राजभाषा हिन्दी में अधिकाधिक कार्य निष्पादन कर पुरस्कार प्राप्त करने वाले संगठनों के प्रमुखों एवं राजभाषा अधिकारियों को पुरस्कार प्रदान करना आकर्षण का विषय था। पूर्वोत्तर के राज्यों असम, मेघालय, नागालैण्ड, मणिपुर, अरूणाचल प्रदेश, मिजोरम एवं सिक्किम को मिलाकर कुल आठ राज्यों में अवस्थित सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम (पीएसयू) वर्ग में ऑयल इंडिया लिमिटेड, पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी को वर्ष 2014-15 के दौरान राजभाषा हिन्दी में उतकृष्ट कार्य प्रदर्शन के एवज में तृतीय पुरस्कार से उक्त समारोह में राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय की संयुक्त सचिव एवं कार्यक्रम की अध्यक्षा श्रीमती पूनम जुनेजा द्वारा सम्मानित किया गया। ऑयल पाइपलाइन मुख्यालय के प्रमुख (संपर्क एवं समन्वय) श्री संजय कुमार राय तथा उप प्रबंधक (राजभाषा) श्री नारायण शर्मा ने उक्त पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र ग्रहण किया।

राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय की संयुक्त सचिव एवं सम्मेलन की अध्यक्षा श्रीमती पूनम जुनेजा से राजभाषा शील्ड ग्रहण करते हुए प्रमुख (संपर्क एवं समन्वय) पा. ला. श्री संजय कुमार राय।

राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय की संयुक्त सचिव एवं सम्मेलन की अध्यक्षा श्रीमती पूनम जुनेजा से राजभाषा प्रशस्ति पत्र ग्रहण करते हुए उप प्रबंधक (राजभाषा) पा. ला. श्री नारायण शर्मा

ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान परियोजना, जोधपुर "प्रथम राजभाषा शील्ड" से सम्मानित

ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान परियोजना, जोधपुर को राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जोधपुर द्वारा "प्रथम राजभाषा शील्ड" से सम्मानित किया गया। उत्तर पश्चिम रेलवे, जोधपुर के सम्मानित मंडल रेल प्रवंधक श्री राहुल कुमार गोयल महोदय के कर कमलों से ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान परियोजना, जोधपुर के श्री नरेंद्र वशिष्ठ महाप्रबंधक (प्रशासन एवं कर्मचारी संपर्क) एवं श्री हरेकृष्ण बर्मन, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने दिनांक 18 दिसंबर, 2015 को मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, जोधपुर में आयोजित नराकास बैठक के दौरान यह शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र ग्रहण किया।

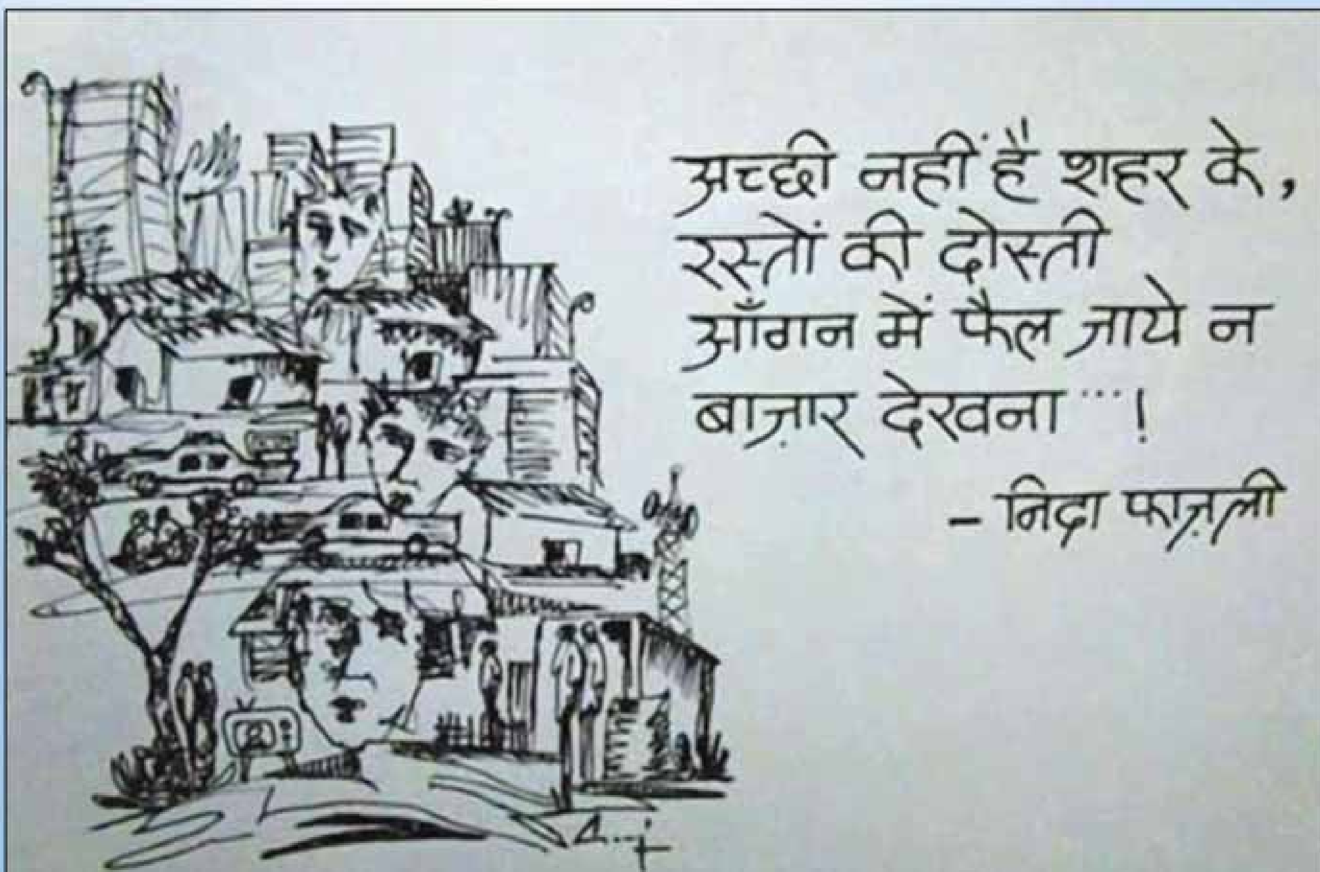

बेटी क्या संतान नहीं !!

एम. धरणी चाँदरी
कक्षा - VII (A)
केन्द्रीय विद्यालय, दुलियाजान

ऐ प्यारे इंसान बता दे बेटी क्या संतान नहीं
बेटा जब जन्म लेता है, घर में है खुशी।।
बेटी जब जब जन्म लेती है तो घर में बुराई
यह तो गलती है संसार की,
जो समझा है उन्होंने बेटी को बेटे से कम।

ऐ प्यारे इंसान बता दे बेटी क्या संतान नहीं।
बेटे को तूने दूध पिलाया,
बेटी को क्यों भूखा सुलाया,
ऐ प्यारे इंसान बता दे बेटी क्या इंसान नहीं।

बेटे को तूने खूब पढ़ाया,
बेटी से क्यों काम कराया,
ऐ प्यारे इंसान बता दे बेटी क्या संतान नहीं।

माता-पिता के दर्द में खुश होता है बेटा,
माता-पिता के दर्द में हमदर्द होती है बेटियाँ।
जिस बेटे को तूने अपना सुख समझा, वह तेरा दुख बना
जिस बेटी को तूने अपना दुख समझा वह तेरा सुख बनी।
यही तो फर्क है बेटे और बेटीयों में।

देशप्रेम और बलिदान

सुश्री गीता कुमारी साह
कक्षा - XII
ऑयल इं. हा. से. स्कूल, दुलियाजान

छोड़ो मत अपनी आन, शीश कट जाए,
मत झुको अन्याय पर भले व्योम फट जाए।
दो बार नहीं यमराज कंठ धरता है।
मरता है जो, एक ही बार मरता है।

देशप्रेम और बलिदान के सैनिक
कहो, तुम्हारी जन्मभूमि का है कितना विस्तार ?
समशीतोष्ण एकरस हमको, होना है अविकार,
कैसे हो सकता है फिर इस विग्रह का परिहार।

हम हैं अलग-अलग जाति,
फिर भी लगते हैं एक ही भाति।
स्वतंत्र जाति की लगन व्यक्ति का धुन है,
बाहरी वस्तु यह नहीं भीतरी गुण है।

नत हुए बिना जो अशनि-घात सहती है,
स्वतंत्र जगत वही जाति रहती है।
जो बलिदान सहे वह सफलता हासिल करता है,
देशप्रेम की भावना सदा संजोय रखता है।।

उमाशंकर उपाध्याय की कुछ कविताएं

उप महाप्रबंधक हिन्दी (सेवानिवृत्त),
निगमित कार्यालय, नोएडा

थक गया

शाम ही थक गई थी
लंबी उदास पीली कराह
गरम हवा के थपेड़े
उफ आह।

बंदर उतर आया नीचे
पानी की तीक्ष्ण धार के किनारे
खूं खे फिर आराम
मैं भी तलाश रहा था ठंढ ठंढ
कुछ कुल्फीनुमा
अहसास
आसपास।

मौत

चांगमाई कल मर गया
अकेले रहता था
बड़े से घर में चांगमाई।
लोग अब बता रहे हैं
कि वह हेवी ड्रिंकर था
जैसे पीना गुनाह हो
जैसे जानता नहीं था चांगमाई कि
पीना मौत है।
मौत को जानबूझ कर
मिल गया चांगमाई।

मयूर विहार

मयूर विहार की शगल हैं
कुत्ते, गाएं और बुद्धिजीवी पत्रकार,
कुछ कवि और पेपरवाला
सब्जीवाले, दवावाले, बेकार आवारा
लड़के।

पत्रकार बराबर रोते रहते हैं
कम सैलरी पर
बाबू हाय हाय करता है
आठ घंटे की खटाई पर

चूल्हे में पकती रोटियों के बीच
वजाहत जी की कहानी
सिंकती है।

अनायास कोई कुत्ता रिरियाता है
पुलिसवाला वसूलता है अपना रोजाना
रोज मरता है यह विहार
भोर में जागने के लिए।
दुनिया में भागने के लिए।

मैं क्यों गया वहां

कहां
नहीं रूकती गाड़ी जहां
मरू की हवाएं खामोश हैं क्यों
पताकाएं उड़ ही नहीं रही

विस्मृत काल बोध में
सब गडमगड डगमगडगमग
एक अवशेष मन की तृषा
आ आ

लेखा-जोखा

डॉ. उमाशंकर पाण्डेय
पी.जी.टी. (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय ओ.आई.एल.
दुलियाजान, तिनसुकिया संभाग

इतने सालों की आजादी, कैसे हम आजाद हुए।
लेखा-जोखा करें कि, पहले से कितने आबाद हुए।।
माना राजधानियाँ सँवरी, महल अटारी बंगलों से।
किन्तु वही फुटपाथ भरे हैं, मोहताजों से, कंगलों से।।
माना राज-पथों पर तैरें, सत्ता की कितनी कारें।
गाँवों में अब तक पहुँचाती, बैलगाड़ियां घर के द्वारे।।
शहरों में तो छाई खुशियाँ, गाँव-गली नाशाद हुए।
लेखा-जोखा करे कि पहले से.....।।

याद हमें हैं आज के नेता, पर शहीद तो भुला दिए।
हमें आकड़े क्रिकेटरों के, अखबारों ने रटा दिए।।
अठ्ठारह-सौ सत्तावन से क्या कितना संघर्ष हुआ?
अंग्रेजों की उस सत्ता का फिर कैसे अपकर्ष हुआ?
कभी न हमको इतिहासों के, वे भी पन्ने याद हुए।
लेखा-जोखा करे कि पहले से.....।।

भ्रष्टाचारी आज देश में, ऊपर से नीचे तक बैठे।
जितने भी हैं अत्याचारी, वो रहते मूछों को ऐंठे।।
सच्चाई या पवित्रता तो, भ्रष्टों के घर पानी भरती।
आज हमारी खेतों की बांगड़ ही, खुद खेतों को चरती।।
गैरों से रिश्ते बने रहे, पर अपनों से अवसाद हुए।
लेखा-जोखा करे कि पहले से.....।।

स्वतंत्रता के पहले दिन से ही, हमने अपने को बाँटा।
अंग्रेजों ने बोया था जो, भेद-भाव का वो कांटा।
मन में आज भी चुभता है, एक कहाँ है अपना देश ?
धर्म, जाति या भाषा के भी, भेद-भाव है मन में शेष।
सम्प्रदाय के इसी जहर से, दंगे और फसाद हुए।
लेखा-जोखा करे कि पहले से.....।।

आओ कदम बढ़ाएँ हम, आओ हाथ मिलाएं हम।
अपने बापू के सपनों का, भारत इसे बनाएँ हम।
सभी गाएँ देश की महिमा, कुछ ऐसा कर जाएँ हम।।
राष्ट्र-विकास ही लक्ष्य हो अपना, गर ऐसा कर पाएँ हम।।
केवल तभी कहेंगे 'उमा' कि हम पूरे आजाद हुए।
अब हम पूरे आबाद हुए, अब हम पूरे आजाद हुए।।

ग्रामीण खेल

ऑयल इंडिया लिमिटेड, ऑयल के प्रचालन क्षेत्रों के गांवों में युवाओं और विद्यार्थियों के बीच क्रीड़ा व खेल-कूद को, विशेष रूप से एथलेटिक्स पर ध्यान केंद्रीत करते हुए ग्रामीण खेलों का आयोजन करता है। ऑयल इंडिया लिमिटेड ने ग्रामीण खेलों को वर्ष 2001 से ही बढ़ावा देने के लिए प्रयासरत है, जिससे की ग्रामीण स्तर की नवोदित प्रतिभाओं को प्रोत्साहित कर एक मंच प्रदान किया जा सके और प्रतिभाओं का इस प्रकार से निर्माण किया जा सके कि वे ग्राम/जिला/राज्य स्तर पर प्रतिनिधित्व कर सकें। इस प्रकार के मंचों पर,ऑयल के प्रचालन क्षेत्रों के गांवों से युवा खिलाड़ियों के भाग लेने के अनेकों उदाहरण हैं।